Govt. College Birohar, Jhajjar

Azadi ka Amrit Mahotsav

2023-24

Post Graduate Department of History

Progamme Number 251 to 303

Head of Department
Dr. Amardeep
Assistant Professor in History

251. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 190th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Veer Baburao Shedmake on 22.05.2023 and delivered keynote address on "Tribal Revolt of Veer Baburao Shedmake and His Contribution in Freedom Struggle of India."

अमर उजाला, चरखी दादरी, हरियाणा 23.05.2023

'अविस्मरणीय है बाबूराव शेडमाके का बलिदान'

बिरोहड़ कॉलेज में विद्यार्थियों को जानकारी देते डॉ. अमरदीप। विज्ञप्ति

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी वीर बाबूराव शेडमाके की 190वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह का मार्गदर्शन रहा।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि चंद्रपुर जिले के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर शहीद वीर बाबूराव शेडमाके का बलिदान भारतीय इतिहास में अविस्मरणीय है। उनका जन्म 1833 ईसवीं में हुआ था। उन्होंने बताया कि ब्रिटिश सरकार धीरे-धीरे आदिवासी क्षेत्रों में अधिकार जमा रही थी। बाबू शेडमाके ने अंग्रेजों से जमीन छुड़ाने के लिए मरते दम तक लड़ाई लड़ने का संकल्प लिया। इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए उन्होंने 24 सितंबर 1857 को 'जंगोम सेना' की स्थापना की।

इसके बाद उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों से जमकर युद्ध किया और उसकी जीत हुई। बाद में अपनों के धोखा देने कारण ब्रिटिश शासन ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और 21 अक्तूबर 1858 को फांसी दे दी। कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र व डॉ. नरेंद्र सिंह मौजूद रहे। संवाद

अमर उजाला, झज्जर, हरियाणा 23.05.2023

बाबुराव ने अंग्रेजों को कड़ी टक्कर देकर किया था डटकर मुकाबला

बिरोहड कालेज में व्याख्यान देते हुए डॉ. अमरदीप। संवाद संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता एवं क्रांतिकारी सेनानी वीर बाबुराव शेडमाके की 190 वीं जयंती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि चंद्रपुर जिले के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर शहीद वीर बाबुराव शेडमाके का बलिदान भारतीय इतिहास में अविस्मरणीय है। गोंडवाना क्षेत्र में वे क्रांति की मशाल थे। वीर बाबुराव शेडमाके मानते थे कि जमीन का हक आदिवासियों का है और वो उन्हें मिलना ही चाहिए। इसलिए उन्होंने मरते दम तक अंग्रेजों के खिलाफ लड़कर अपने लोगों की रक्षा करने का संकल्प लिया।

इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए 24 सितंबर 1857 को उन्होंने 'जंगोम सेना' की स्थापना की। जिसमे आस पास के वीर युवा आदिवासी शामिल थे। जगह जगह पूरी सेना के साथ अपना अधिकार करने लगे। 1857 के विद्रोह की शुरुआत 10 मई को उत्तर भारत में हो चुकी थी। उन पर अंग्रेजी राज्य के खिलाफ विद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया।

252. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 134th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Gopi Chand Bhargava on 23.05.2023 and delivered keynote address on "Gopi Chand Bhargava: Life and Mission."

अमर उजाला, झज्जर 24.05.2023

कार्यक्रम

राजकीय कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी की 134वीं जयंती पर व्याख्यान का आयोजन

आजादी के आंदोलन में गोपीचंद का अहम योगदान

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ गोपी चन्द भार्गव की 134 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि गोपी चन्द भार्गव का जन्म 1889 को तत्कालीन पंजाब के हिसार जिले में हुआ था। गोपी चन्द भार्गव ने लाहौर मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद 1913 से चिकित्सा कार्य शुरू किया था। 1919 में जलियावाला बाग़ नरसंहार की घटना ने गोपी चंद्र भार्गव को बहुत आहत किया और वे सक्रिय राजनीति में कूद पड़े। राष्ट्रवादी नेताओं जैसे महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय आदि के विचारों ने गोपीचंद भार्गव बहुत ज्यादा प्रभावित किया। उन्होंने सर्वप्रथम असहयोग आंदोलन में भाग लिया और जेल की यात्रा की। इसके बाद उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और जेल की सजाएं काटी, पर देशभक्ति की भावना को सबसे ऊपर रखा। यही कारण था कि पूरे पंजाब सूबे में गोपी चंद भार्गव की अटूट निष्ठा और देशभक्ति के कारण का उनका बड़ा सम्मान था। रचनात्मक कार्यों में भी उन्होंने जबरदस्त उत्साह दिखाया और छुआछूत, जाति प्रथा का विरोध किया और महिलाओं की समानता के वे पक्षधर थे। कांग्रेस संगठन में वे कई पदों पर रहे। 1946 में गोपी चंद भार्गव पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए।

बिरोहड कालेज में व्याख्यान देते हुए प्रोफेसर अमरदीप। संवाद संवाद

भारत की आजादी और फिर विभाजन के बाद सरदार पटेल के अनुरोध पर उन्होंने संयुक्त पंजाब के प्रथम मुख्यमंत्री का पद स्वीकार किया और जनता की सेवा का प्रण लेते हुए पहली बार 15 अगस्त, 1947 से 13 अप्रैल, 1949 तक संयुक्त पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद फिर वे दूसरी बार और तीसरी बार 1964 तक मुख्यमंत्री रहे। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 24.05.2023

महान स्वतंत्रता सेनानी गोपीचंद को याद किया

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभाग की ओर से महान स्वतंत्रता सेनानी गोपीचंद भार्गव की 134वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इतिहास विभागाध्यक्ष अमरदीप ने कहा कि 1919 में जलियांवाला बाग नरसंहार की घटना ने गोपीचंद भार्गव को बेहद आहत किया और वे सक्रिय राजनीति में कूद पड़े। वे राष्ट्रवादी नेताओं महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय आदि के विचारों से प्रभावित हुए। संवाद

253. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 108th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Subodh Roy on 25.05.2023 and delivered keynote address on "Contribution of Subodh Roy in Indian Freedom Struggle."

Amar Ujaja, Jhajjar 26.05.2023

जयंती पर क्रांतिकारी सुबोध रॉय को याद किया

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान का किया गया आयोजन

संवाद न्यूज़ एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी सुबोध रॉय की 108वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विद्यार्थियों को जीवन परिचय बताया

इस कार्यक्रम के संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि सुबोध रॉय का जन्म 1915 को चटगांव, तत्कालीन बांग्लादेश में हुआ था। रॉय भारत के स्वाधीनता आंदोलन से प्रभावित क्रांतिकारी समाजवादी थे।

रिवोल्युशनरी इंडियन सोशलिस्ट पार्टी के नेता सूर्यसेन ने 1930 में चटगांव में अंग्रेजों के हथियारों की मालखाने पर छापा मारने की योजना बनाई। योजना के तहत चटगांव में दो मालखानों पर कब्जा करना शामिल था।

क्रांति की ज्वाला को और तेज करने के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से चटगांव में इंपीरियल बैंक को लूटना और क्रांतिकारियों को जेल से छुड़ाना भी योजना का हिस्सा था। 18 अप्रैल को इस योजना पर अमल किया गया।

क्रांतिकारियों के एक समूह ने यूरोपियन क्लब के मुख्यालय पर कब्जा कर लिया। इसमें सुबोध रॉय ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1934 में पोर्टब्लेयर की सेल्यूलर जेल, काला पानी की सजा, भेज दिया गया। 1940 में जेल से रिहा होने के बाद रॉय राजनीति में आ गए और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए। सुबोध रॉय ने कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास में बडा बौद्धिक योगदान दिया। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र, डॉ नरेंद्र सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ कॉलेज में व्याख्यान देते प्रोफेसर अमरदीप। संवाद

Amar Ujala, Charkhi Dadri

26.05.2023

क्रांतिकारी सुबोध रॉय को 108वीं जयंती पर याद किया

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी सुबोध रॉय की 108 वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि सुबोध रॉय भारत के स्वाधीनता आंदोलन से प्रभावित क्रांतिकारी एवं समाजवादी थे। रिवोल्युशनरी इंडियन सोशलिस्ट पार्टी के नेता सूर्यसेन ने 1930 में चिटगांव में अंग्रेजों के हथियारों की मालखाने पर छापा मारने की योजना बनाई। योजना के तहत चटगांव में दो मालखानों पर कब्जा करना शामिल था। क्रांति की ज्वाला को और तेज करने के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से चटगांव में इंपीरियल बैंक को लूटना और क्रांतिकारियों को जेल से छुड़ाना भी योजना का हिस्सा था।

18 अप्रैल को इस योजना पर अमल किया गया। क्रांतिकारियों के एक समूह ने यूरोपियन क्लब के मुख्यालय पर कब्जा कर लिया, जिसमें सुबोध रॉय ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1934 में सुबोध को पोर्ट ब्लेयर की सेल्यूलर जेल भेज दिया गया। 1940 में जेल से रिहा होने के बाद रॉय राजनीति में आ गए और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए। कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह भी उपस्थित रहे। संवाद

254. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 135th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Baba Gurmukh Singh on 26.05.2023 and delivered keynote address on “Gadar Movement and Contribution of Baba Gurmukh Singh.”

Amar Ujala, Jhajjar 27.05.2023

बाबा गुरमुख सिंह का आजादी की क्रांति में रहा अमूल्य योगदान

राजकीय महाविद्यालय में व्याख्यान करते प्रवक्ता। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी बाबा गुरमुख सिंह की 135वीं जयंती पर उन्हें नमन किया। इसमें इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि बाबा गुरमुख सिंह वो क्रांतिकारी थे, जिन्होंने कोमागाटा मारू और गदर क्रांति में प्रबल योगदान दिया। बाबा का जन्मलुधियाना जिले के लालटन खुर्द में 1888 में हुआ था। उन्होंने लुधियाना के एक चर्च मिशन स्कूल में मैट्रिक तक की पढ़ाई की और करतार सिंह सराभा के स्कूल के साथी थे। उन्होंने सेना में शामिल होने का प्रयास किया,लेकिन चिकित्सा कारणों से उन्हें भर्ती नहीं किया जा सका 1914 में, कनाडा जाने के लिए कोमागाटा मारू जहाज पर सवार हुए लेकिन ब्रिटिश सरकार के कारण उन्हें कनाडा पहुंचने पर भारतीय यात्रियों को उतरने की अनुमति नहीं मिली और उन्हें भारत लौटना पड़ा। जहाज कलकत्ता के बजबजघाट पर उतरा, जहां पर भारी पुलिस बल इन यात्रियों का गिरफ्तार करने पर तैयार खड़ा था ।

इसलिए भारतीय यात्रियों और स्थानीय पुलिस के बीच झड़प हुई। अवसर देखकर बाबा गुरमुख सिंह वहां से बचकर निकल गए, लेकिन तीन दिन बाद उसे पकड़ लिया गया और अलीपुर जेल में कैद कर दिया गया। तीन महीने बाद उन्हें पंजाब लाया गया तो करतार सिंह सराभा और रास बिहारी बोस के प्रभाव में नजरबंद होने के आदेश के तहत उन्होंने पंजाब की कुछ छावनियों में भारतीय सैनिकों के साथ गुप्त संपर्क स्थापित करने के प्रयास किए।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 27.05.2023

करतार सिंह सराभा के स्कूल के साथी थे क्रांतिकारी बाबा गुरमुख सिंह

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी गुरमुख सिंह के बारे में बताते डा. अमरदीप।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी बाबा गुरमुख सिंह की 135वीं जयंती पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि बाबा गुरमुख सिंह वे क्रांतिकारी थे जिन्होंने कोमागाटा मारू और गदर क्रांति में प्रबल योगदान दिया। उनका जन्म लुधियाना जिले के लालटन खुर्द में 1888 में हुआ था। उन्होंने लुधियाना के एक चर्च मिशन स्कूल में मैट्रिक तक की पढ़ाई की और करतार सिंह सराभा के स्कूल के साथी थे। उन्होंने सेना में शामिल होने का प्रयास किया, लेकिन चिकित्सा कारणों से उन्हें भर्ती नहीं किया जा सका। 1914 में कनाडा जाने के लिए कोमागाटा मारू जहाज पर सवार हुए। परंतु ब्रिटिश सरकार के कारण उन्हें कनाडा पहुंचने पर भारतीय यात्रियों को उतरने की अनुमति नहीं मिली और उन्हें भारत लौटना पड़ा।

जहाज कलकत्ता के बजबज घाट पर उतरा जहां पर भारी पुलिस बल इन यात्रियों का गिरफ्तार करने पर तैयार खड़ा था। अवसर देखकर बाबा गुरमुख सिंह वहां से बचकर निकल गए, परंतु तीन दिन बाद उसे पकड़ लिया गया और अलीपुर जेल में कैद कर दिया गया।

तीन महीने बाद उन्हें पंजाब लाया गया। करतार सिंह सराभा और रास बिहारी बोस के प्रभाव में नजरबंद होने के आदेश के तहत उन्होंने पंजाब की कुछ छावनियों में भारतीय सैनिकों के साथ गुप्त संपर्क स्थापित करने के प्रयास किए। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र, डा. नरेंद्र सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

255. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 88th Mahaparinirvan Diwas of Great Freedom Fighter Ramabai Ambedkar on 27.05.2023 and delivered keynote address on “Role of Ramabai in Making of the Dr. B.R. Ambedakr.”

है। दिल्ली गेट में ना... ल रहा है। दस से 1... जाएगा।- मंदीप सिं... झज्जर।

अमर उजाला, झज्जर 28.05.2023

...कारी अभियंता, बिजली झज्जर। ... इन बिजलीघरों की ... रही।

रमाबाई महिलाओं के लिए प्रेरणादायक

राजकीय महाविद्यालय में रमाबाई आंबेडकर महापरिनिर्वाण दिवस पर कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महिला शक्ति की प्रतीक रमाबाई आंबेडकर के 88वें महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर एक पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ अमरदीप, डॉ अनीता रानी, राजेश कुमार, पवन कुमार, दीपक इत्यादि द्वारा पौधरोपण किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि रमाबाई आंबेडकर नारी शक्ति प्रेरणास्रोत है। 7 फरवरी 1898 में रत्नागिरी के वणदगांव में एक बेहद गरीब परिवार में जन्मी रमाबाई के माता पिता बचपन में ही गुजर गये थे। 1906 में इनका विवाह डॉ भीमराव आंबेडकर के साथ हुआ और उसके बाद रमाबाई डॉ आंबेडकर की प्रेरणा शक्ति बन गई।

आजादी के आन्दोलन में महिलाओं ने बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था। उन्हीं में से एक रमाबाई आंबेडकर थी। जब भयंकर गरीबी के कारण उनके चार पुत्रों का निधन हुआ तब भी उन्होंने डॉ. आंबेडकर को पढ़ाई और देशसेवा से भटकने नही दिया बल्कि वे खुद बाबासाहेब का मनोबल बढ़ाती रहीं। 27 मई 1935 में बाबा साहेब डॉ.आंबेडकर के सामने उनका महापरिनिर्वाण हुआ परन्तु रमाबाई अपने पीछे विषम से विषम परिस्थितियों में भी संघर्ष करने की अटूट निष्ठा की कभी न भूलने वाली दास्तां कह गई, जो आज सम्पूर्ण भारतीय महिला शक्ति के लिए प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर प्रोफेसर राजेश कुमार, पवन कुमार, दीपक इत्यादि उपस्थित रहे।

रमाबाई आंबेडकर के महापरिनिर्वाण पर पौधरोपण करते हुए स्टाफ सदस्य। संवाद

न्यूज डायरी

अमर उजाला, चरखी दादरी
28.05.2023

रमाबाई के महापरिनिर्वाण दिवस पर पौधरोपण

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को रमाबाई आंबेडकर के 88वें महापरिनिर्वाण दिवस पर पौधरोपण किया गया। इसकी अगुवाई महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने की। इस दौरान डॉ. अमरदीप, डॉ. अनीता रानी, राजेश कुमार, पवन कुमार, दीपक आदि ने संयुक्त रूप से पौध रोपित कर रमाबाई को याद किया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि रमाबाई आंबेडकर नारी शक्ति प्रेरणास्रोत हैं। 7 फरवरी 1898 में रत्नागिरी के वणंदगाव के एक बेहद गरीब परिवार में रमाबाई का जन्म हुआ। 1906 में इनका विवाह डॉ. भीमराव आंबेडकर से हुआ। आजादी के आंदोलन में महिलाओं ने रमाबाई की अगुवाई में बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था। आज संपूर्ण भारतीय महिला शक्ति के लिए वे प्रेरणास्रोत हैं। संवाद

256. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 2nd Death Anniversary of Great Historian Professor K.C. Yadav on 29.05.2023 and delivered keynote address on "Contribution of Prof. K.C. Yadav in History of Haryana."

अमर उजाला, चरखी दादरी, 30.05.2023

इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव को किया याद

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास कांग्रेस के तत्वावधान में महान इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि हरियाणा के इतिहास लेखन में प्रोफेसर केसी यादव ने अद्वितीय भूमिका निभाई और नये शोध का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र, नरेंद्र सिंह, भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार आदि मौजूद रहे। संवाद

न्यूज डायरी | **अमर उजाला, झज्जर, 30.05.2023**

इतिहास लेखन में प्रो.यादव ने अहम भूमिका निभाई

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि हरियाणा के इतिहास लेखन में प्रोफेसर के सी यादव ने अहम भूमिका निभाई और नये शोध का मार्ग प्रशस्त किया। जब 1966 में हरियाणा का निर्माण एक नए राज्य के रूप में हुआ था, तब विद्यार्थियों के पास हरियाणा के इतिहास पर कोई विशेष शोध पुस्तकों की भारी कमी थी क्योंकि अभी तक केवल पंजाब का ही इतिहास पढ़ाया जाता था। इस विकट समस्या का निवारण प्रोफेसर के सी यादव ने किया। इस कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र, डॉ नरेन्द्र सिंह, भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

257. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 143rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Revolutionary Bhupendranath Dutta on 02.06.2023 and delivered keynote address on “Contribution of Bhupendranath Dutta in Revolutionary movement.”

अमर उजाला, चरखी दादरी 03.06.2023

समारोह

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में मनाई गई क्रांतिकारी भूपेंद्रनाथ दत्त की 143वीं जयंती

भूपेंद्रनाथ दत्त बंगाल के प्रबुद्ध क्रांतिकारियों में थे शामिल : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता एवं क्रांतिकारी भूपेंद्रनाथ दत्त की 143वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में हुआ।

कार्यक्रम संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1880 में कलकत्ता में जन्मे भूपेंद्रनाथ दत्त बंगाल के प्रबुद्ध क्रांतिकारियों में शामिल थे और वे स्वामी विवेकानंद के भाई थे। भूपेंद्रनाथ दत्त बंगाल क्रांतिकारी दल के मुख्य पत्र युगांतर के संपादक बने। 1902 में उन्हें राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तार करके एक वर्ष कैद की सजा दे दी गई। जेल से छूटने पर ब्रिटिश सरकार ने उनको अलीपुर बम कांड में फंसाने की तैयारी की परंतु वो विदेश में आजादी के आंदोलन को फैलाने के लिए अमेरिका चले गए। 1925 में वो भारत आए। भारत में गदर आंदोलन की विफलता के पश्चात वे कांग्रेस में सम्मिलित हो गए। वो दो बार अखिल भारतीय श्रमिक संघ के अध्यक्ष भी रहे। समाज सुधार के कामों में भी वो बराबर भाग लेते रहे।

दत्त बंगाल क्रांतिकारी दल के मुख्य पत्र युगांतर के संपादक बने

वे स्वामी विवेकानंद के भाई थे

कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह, डॉ. नरेंद्र सिंह, प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र आदि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संबोधित करते डॉ. अमरदीप। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 03.06.2023

भूपेन्द्रनाथ दत्त के बारे में बताया

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता एवं क्रांतिकारी भूपेंद्रनाथ दत्त की 143वीं जयंती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1880 में कलकत्ता में जन्मे भूपेंद्रनाथ दत्त बंगाल के प्रबुद्ध क्रांतिकारियों में शामिल थे और वे स्वामी विवेकानंद के भाई थे। भूपेंद्रनाथ की आरंभिक शिक्षा ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा स्थापित विद्यालय में हुई थी। उन्होंने राजनीतिक गतिविधियों के साथ अपना अध्ययन भी जारी रखा और अमेरिका से एमए और जर्मनी से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। भूपेंद्रनाथ दत्त शीघ्र ही क्रांतिकारियों के संपर्क में आ गए और बंगाल क्रांतिकारी दल के मुख्य पत्र युगांतर के संपादक बने। 1902 में उन्हें राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तार करके एक वर्ष कैद की सजा दे दी गई। वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध क्रांतिकारी, लेखक तथा समाजशास्त्री थे। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र सिंह, प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र आदि उपस्थित रहे। संवाद

258. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special tree plantation drive on 118th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Tarkeshwar Sengupta on 03.06.2023 and delivered keynote address on "Contribution of Tarkeshwar Sengupta in Freedom Movement."

अमर उजाला, झज्जर, 04.06.2023

तारकेश्वर ने युवाओं को नमक सत्याग्रह के लिए किया था प्रेरित

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में पौधरोपण करते कॉलेज के प्रोफेसर। संवाद

संवाद न्यूज़ एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी तारकेश्वर सेन गुप्ता की 118वीं जयंती एक पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

डॉ अनीता रानी, डॉ अमरदीप, पवन कुमार, साहिल ढाणी फोगाट द्वारा वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि अमर शहीद तारकेश्वर सेनगुप्ता का जन्म 1905 में बारीसाल के गेला गांव में एक बंगाली मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। वे अपने पारिवारिक वातावरण में देशभक्ति के विचार से प्रेरित थे। तारकेश्वर सेनगुप्ता एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने के कारण सेनगुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया और कुछ महीनों के लिए जेल में डाल दिया गया। 1930 के नमक सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और युवाओं को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जिस कारण इन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों के करण हिजली जेल में बंद कर दिया गया। जेल में 16 सितंबर 1931 को निहत्थे कैदियों पर अंग्रेजों ने गोलियां चलवाई थी।

अमर उजाला, चरखी दादरी, 04.06.2023

क्रांतिकारी तारकेश्वर सेनगुप्ता की जयंती पर किया पौधरोपण

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में पौधरोपण करते शिक्षक। विज्ञप्ति

चरखी दादरी। बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी तारकेश्वर सेनगुप्ता की 118वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों ने पौधरोपण किया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि अमर शहीद तारकेश्वर सेनगुप्ता का जन्म 1905 में बारीसाल के गेला गांव में एक बंगाली मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। वे अपने पारिवारिक वातावरण में देशभक्ति के विचार से प्रेरित थे। तारकेश्वर सेनगुप्ता एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने के कारण सेनगुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया और कुछ महीनों के लिए जेल में डाल दिया गया। 1

930 के नमक सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और युवाओं को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जिस कारण इन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों के करण हिजली जेल में बंद कर दिया गया। जेल में 16 सितंबर 1931 को निहत्थे कैदियों पर अंग्रेजों ने अंधाधुंध गोलियां चलवाई थीं। जिसमें तारकेश्वर सेनगुप्ता और उनके साथी संतोष मित्रा शहीद हो गए। संवाद

259. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 98th Death Anniversary of Great Freedom Fighter Chittaranjan Das 17.06.2023 and delivered keynote address on “Bengal Politics and Contribution of Chittaranjan Das.”

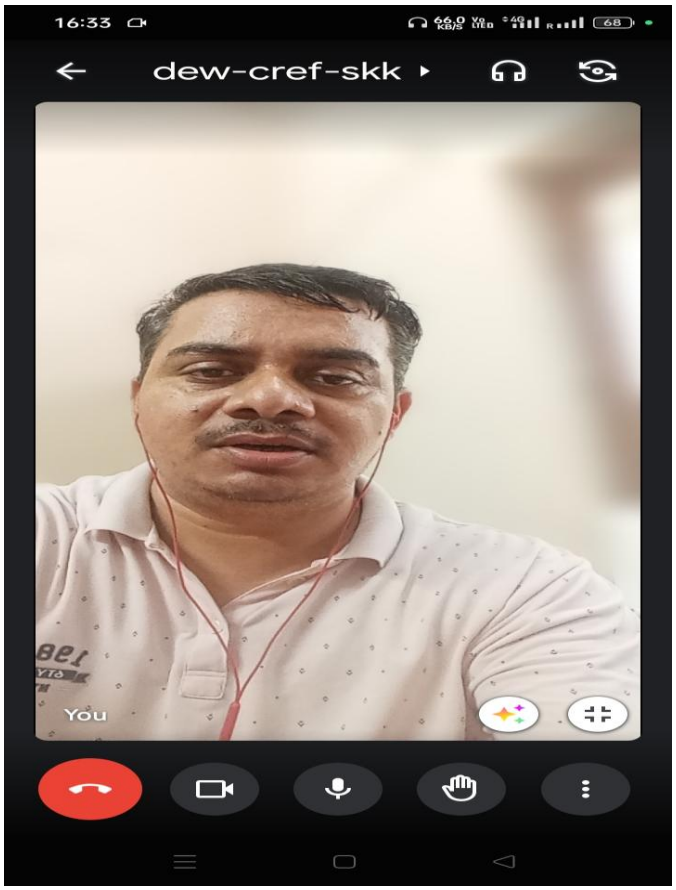

अमर उजाला चरखी दादरी 18.06.2023

चित्तरंजन दास की 98वीं पुण्यतिथि पर हुआ वेबिनार

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी चित्तरंजन दास की 98वीं पुण्यतिथि के अवसर पर वेबिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने चित्तरंजन दास के देश की आजादी के आंदोलन में भूमिका के बारे में बताया। संवाद

260. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special online programme on 8[1st] Birth Anniversary of Great Social Reformer **Guru Prasad Madan** on 05.07.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर, हरियाणा
06.07.2023

गुरु प्रसाद ने सशक्त राष्ट्र की स्थापना के लिए संघर्ष किया

संवाद न्यूज एजेंसी

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में समाज सुधारक गुरु प्रसाद मदन के जन्मदिवस पर व्याख्यान

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान समाज सुधारक एवं लेखक गुरु प्रसाद मदन के 81 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

डॉ. अमरदीप।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने सशक्त राष्ट्र और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष किया। वे स्नातक की परीक्षा पास करने वाले अपने गांव से प्रथम विद्यार्थी थे, पर उनके पिता महाशय भिखुलाल ने अपने इकलौते पुत्र से वचन लिया कि वह कभी सरकारी नौकरी नही करेगा बल्कि अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण में लगाते हुए निस्वार्थ समाज सेवा व सुधार करेगा।

1942 में अजुहा, उत्तर प्रदेश में जन्में गुरु प्रसाद मदन का नामकरण महान समाज सुधारक स्वामी अछूतानन्द हरिहर ने जन्म से पहले ही कर किया था। तभी से उनके पिता महाशय भिखुलाल ने अपने पुत्र को देशसेवा के लिए तैयार करना शुरू कर दिया था। उसी नक्शे कदम पर चलते हुए गुरु प्रसाद मदन ने आजादी के पश्चात राष्ट्र और समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गुरु प्रसाद मदन ने तीसरी कक्षा से आर्य समाज की वेदी से पहला समाज सुधार का भाषण दिया था, तब से लेकर उन्होंने निरंतर युवाओं को सिनेमा इत्यादि के कुप्रभाव से बचाने के लिए "गंदगी की जड़: सिनेमा और लाउडस्पीकर" जैसे लेख लिखें। 1964 के लखनऊ में भूमि बंटवारा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1981-83 के जुगराजपुर गांव में दलितों के मानवीय अधिकारों के संरक्षण के लिए बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी और बेगारी, रात बसना इत्यादि बुराइयों को समाप्त करवाया। वर्तमान समय तक गुरु प्रसाद मदन ने संपूर्ण भारत में अपने हजारों भाषणों और लेखन के माध्यम से समाजोपयोगी कार्य कर चुके है। इस विशेष कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र, राजेश कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण,
चरखी दादरी हरियाणा
06.07.2023

मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयासरत रहे मदन

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बुधवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में समाज सुधारक एवं लेखक गुरु प्रसाद मदन के 81वें जन्मदिवस के अवसर पर आनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने सशक्त राष्ट्र और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष किया। वे स्नातक की परीक्षा पास करने वाले अपने गांव से प्रथम विद्यार्थी थे। लेकिन उनके पिता महाशय भीखू लाल ने अपने इकलौते पुत्र से वचन लिया कि वे कभी सरकारी नौकरी नहीं करेंगे बल्कि अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण में लगाएंगे। 1942 में अजुहा उत्तर प्रदेश में जन्मे गुरु प्रसाद मदन का नामकरण समाज सुधारक स्वामी अछूतानंद हरिहर ने जन्म से पहले ही कर किया था। तभी से उनके पिता महाशय भीखू लाल ने अपने पुत्र को देश सेवा के लिए तैयार करना शुरू कर दिया था। उसी नक्शे कदम पर चलते हुए गुरु प्रसाद मदन ने आजादी के बाद राष्ट्र और समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुरु प्रसाद मदन ने तीसरी कक्षा से आर्य समाज की वेदी से पहला समाज सुधार का भाषण दिया था। इस मौके पर प्रो. पवन कुमार, जितेंद्र, राजेश कुमार ने भी अपने विचार रखे।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 06-07-2023

महान समाज सुधारक और लेखक गुरु प्रसादमदन का 81वां जन्मदिवस मनाया

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान समाज सुधारक एवं लेखक गुरु प्रसाद मदन के 81वें जन्मदिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने सशक्त राष्ट्र और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष किया। वे स्नातक की परीक्षा पास करने वाले अपने गांव से प्रथम विद्यार्थी थे, पर उनके पिता महाशय भिखुलाल ने अपने इकलौते पुत्र से वचन लिया कि वह कभी सरकारी नौकरी नहीं करेगा बल्कि अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण में लगाते हुए निस्वार्थ समाज सेवा व सुधार करेगा। 1942 में अजुहा, उत्तर प्रदेश में जन्में गुरु प्रसाद मदन का नामकरण महान समाज सुधारक स्वामी अछूतानन्द हरिहर ने जन्म से पहले ही कर दिया था। गुरु प्रसाद मदन ने तीसरी कक्षा से आर्य समाज की वेदी से पहला समाज सुधार का भाषण दिया था, तब से लेकर उन्होंने निरन्तर युवाओं को सिनेमा इत्यादि के कुप्रभाव से बचाने के लिए "गंदगी की जड़: सिनेमा और लाउडस्पीकर" जैसे लेख लिखें। 1964 के लखनऊ में भूमि बंटवारा आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1981-83 के जुगराजपुर गांव में दलितों के मानवीय अधिकारों के संरक्षण के लिए बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी और बेरोजगारी, रात बसना इत्यादि बुराइयों को समाप्त करवाया। इस कार्यक्रम में पवन , जितेन्द्र, राजेश कुमार उपस्थित रहे।

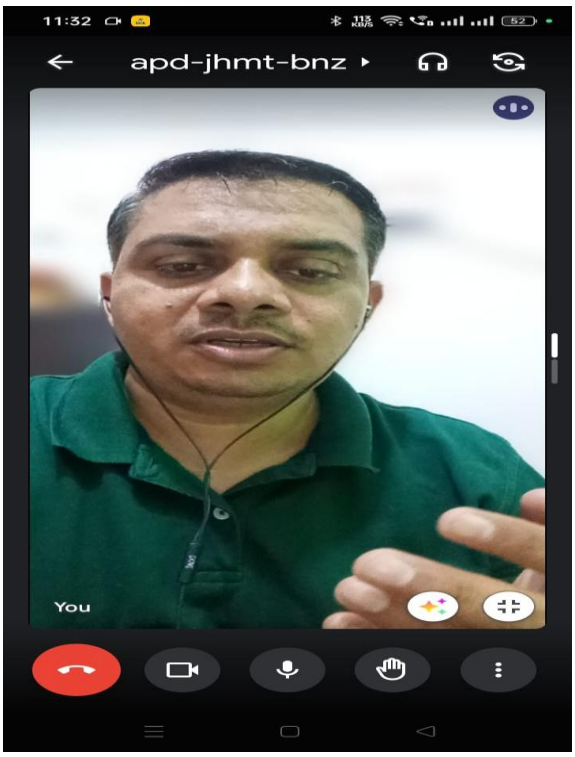

261. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special online programme on 111st Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter** and revolutionary **Jiban Lal Goshal** on 07.07.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर
08.07.2023

18 वर्ष की आयु में शहीद हुए थे जिबन लाल

सालहावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग व हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी जिबन लाल घोषाल की 111वीं जयंती के अवसर पर एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि जिबन लाल उर्फ माखनलाल घोषाल देश की आजादी के लिए मास्टर सूर्यसेन की ओर से गठित चटगांव क्रांतिकारी समूह के जाबांज सदस्य थे। 1912 में अविभाजित बंगाल के चटगांव में सदरघाट में जन्मे जिबन लाल बचपन से ही देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे। इस विशेष कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र आदि उपस्थित रहे। संवाद

डॉ. अमरदीप। संवाद

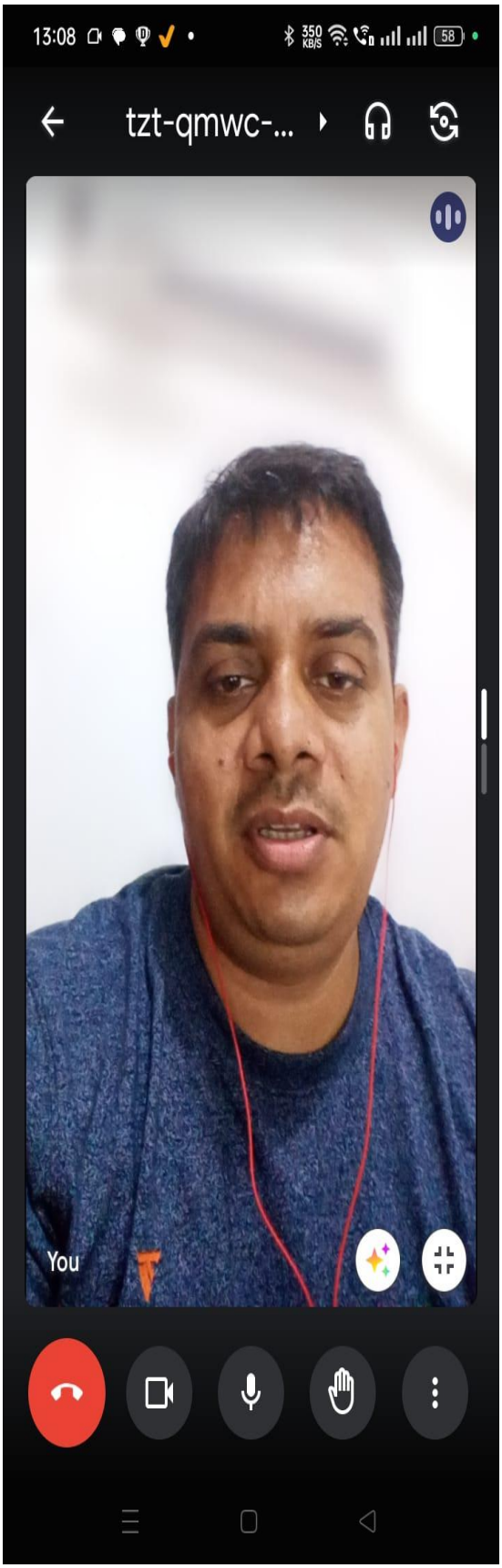

262. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special tree plantation programme on 93rd Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter** and Social Reformer **Lahori Ram Bali (L.R. Bali)** on 21.07.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी, हरियाणा 22.07.2023

समतामूलक, तार्किक समाज के लिए आजीवन संघर्षरत रहे एलआर बाली

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में स्वतंत्रता सेनानी एलआर बाली की 93वीं जयंती पर पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डा. अमरदीप, पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि द्वारा वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि आजादी के पश्चात के नवीन और समतामूलक समाज की स्थापना का कार्य लाहौरी राम बाली ने किया।

पंजाब के नवांशहर में प्रेमी देवी, भगवान दास के घर 20 जुलाई, 1930 को जन्मे बाली ने बचपन से ही राजनीतिक, सामाजिक मसलों में गंभीर रुचि ली। उनके दादा चौ. इंद्र राम ऐतिहासिक आदि धर्म के संस्थापक बाबू मंगूराम मुगोवालिया के निकट सहयोगी थे। 1920 के दशक के उत्तरार्द्ध में इस आंदोलन ने पंजाब के निम्न वर्ग की जातियों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना जागृत करने में महती भूमिका निभाई थी। जब भारत आजादी के कगार पर था, तब बाली 1947 में काम के तलाश में बाली दिल्ली आ गए। 1948 को उन्हें सरकारी गवर्नमेंट प्रेस में कापी होल्डर का काम मिल गया। इसी दौरान उनकी मुलाकात बाबा साहेब डा. आंबेडकर से हुई। 1956 तक वे उनके सानिध्य में रहे। 30 सितंबर, 1951 को एक कार्यक्रम में उन्होंने डा. आंबेडकर से वायदा किया कि वे भारत में समतामूलक समाज के उनके मिशन को पूरा करने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देंगे। 1964 में उन्होंने भूमि बंटवारा आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवसर पर प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र, डा. नरेंद्र सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

- 1920 के दशक में इस आंदोलन ने पंजाब में सामाजिक और राजनीतिक चेतना जागृत करने में महती भूमिका निभाई थी

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में पौधारोपण करते डा. अमरदीप, पवन कुमार, जितेंद्र।

अमर उजाला, झज्जर, हरियाणा
23.07.2023

बाली का समतामूलक समाज की स्थापना में अमूल्य योगदान

बिरोहड कॉलेज में जयंती पर पौधरोपण करते कालेज स्टॉफ। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक एलआर बाली की 93वीं जयंती मनाई गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्रशासनिक अधिकारी डॉ अनीता रानी, डॉ अमरदीप, पवन कुमार, जितेंद्र ने की। इस मौके पर पौधरोपण किया गया। प्रशासनिक अधिकारी डॉ अनीता रानी ने कहा कि एलआर बाली ने भारत में नवीन और समतामूलक समाज की स्थापना का कार्य लाहौरी राम बाली ने किया। पंजाब के नवांशहर में प्रेमी देवी और भगवान दास के घर 20 जुलाई, 1930 को जन्मे बाली ने बचपन से ही राजनीतिक और सामाजिक मसलों में गंभीर रुचि ली। 1920 के दशक के उत्तरार्द्ध में इस आंदोलन ने पंजाब के निम्न वर्ग की जातियों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना जागृत करने में महती भूमिका निभाई थी। कार्यक्रम के संयोजक डॉ

समाज सुधारक एलआर बाली की जयंती पर व्याख्यान

अमरदीप ने कहा कि जब भारत आजादी के कगार पर था, तब बाली 1947 में काम के तलाश में बाली दिल्ली आ गए। 1948 को उन्हें सरकारी गवर्नमेंट प्रेस में 'कॉपी होल्डर' का काम मिल गया। इसी दौरान उनकी मुलाकात बाबा साहेब डॉ आंबेडकर से हुई और 1956 तक वे उनके सानिध्य में रहे। 30 सितंबर, 1951 को एक कार्यक्रम में उन्होंने डॉ आंबेडकर से वायदा किया कि वे भारत में समतामूलक समाज के उनके मिशन को पूरा करने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देंगे। 1956 में डॉ. आंबेडकर की मृत्यु के बाद एलआर बाली ने अपनी नौकरी छोड़ दी और समाज सुधार के कार्यों में जुट गये। 1964 में उन्होंने भूमि बंटवारा आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनकी गिरफ्तारी के बाद उनकी पत्नी बीबी अजीत बाली ने आंदोलन को गति दी और बाद में उन्हें भी उनके दो छोटे बच्चों राहुल और सुजाता के साथ गिरफ्तार किया।

अमर उजाला, चरखी दादरी, हरियाणा 22.07.2023

एलआर बाली की 93वीं जयंती पर हुआ कार्यक्रम

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय कॉलेज में स्नातकोत्तर इतिहास के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक एलआर बाली की 93वीं जयंती के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, पवन कुमार व जितेंद्र ने पौधरोपण किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने एलआर बाली के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में इस अवसर पर प्रोफेसर पवन कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे। संवाद

263. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special tree plantation programme on 117th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter** and **Revolutionary Leader Chandra Shekhar Azad** on 24.07.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी, 25.07.2023

चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर किया पौधारोपण

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर पौधारोपण किया गया। महाविद्यालय की प्रशासनिक अधिकारी डा. अनिता रानी, डा. अमरदीप, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र, दीपक इत्यादि ने कई पौधे लगाए। प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि 27 फरवरी 1931 का दिन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस दिन चंद्रशेखर आजाद ने अपने अद्वितीय साहस से स्वर्णिम शौर्यगाथा लिखी। जिससे आज भी युवा प्रेरणा लेते हैं। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि आजादी के संग्राम में चंद्रशेखर आजाद का बलिदान बड़ा माना जाता है। चंद्रशेखर आजाद औपनिवेशिक भारत के सबसे बड़े क्रांतिकारी और संगठनकर्ता थे। महज 15 साल की आयु में चंद्रशेखर आजाद असहयोग आंदोलन में कूद पड़े थे। 27 फरवरी 1931 को अंग्रेजों से लड़ाई करते हुए चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में बलिदान हो गए। इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र, दीपक कुमार इत्यादि ने भी अपने विचार रखे।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में पौधारोपण करते प्रोफेसर। • विज्ञप्ति

अमर उजाला, झज्जर 25.07.2023

चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर पौधरोपण

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की 117वीं जयंती के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षा महाविद्यालय एवं प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी, डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र, दीपक आदि ने पौधरोपण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 27 फरवरी 1931 का दिन भारत के इतिहास महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिस दिन चंद्रशेखर आजाद ने अपने अद्वितीय साहस से स्वर्णिम शौर्यगाथा लिखी, जिससे आज भी युवा प्रेरणा लेते हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि आजादी के संग्राम में क्रांतिकारियों की शहादत में सबसे बड़ी शहादत चंद्रशेखर आजाद की ही मानी जाती है। संवाद

बिरोहड़ कॉलेज में पौधरोपण करते स्टाफ के सदस्य। संवाद

संदीप राठी
पदाधिकारी

अमर उजाला, चरखी दादरी, 25.07.2023

जयंती पर चंद्रशेखर आजाद के बारे में बताया

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महाविद्यालय की प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी, डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र व दीपक ने पौधरोपण के साथ की। इसके बाद विद्यार्थियों को चंद्रशेखर आजाद के बारे में विस्तार से बताया गया। प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 27 फरवरी 1931 का दिन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस दिन चंद्रशेखर आजाद ने अपने अद्वितीय साहस से स्वर्णिम शौर्यगाथा लिखी जिससे आज भी युवा प्रेरणा लेते हैं। उस दिन चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में सुखदेव राज और अपने एक अन्य साथियों के साथ बैठकर आगामी योजना बना रहे थे पर इसका अंग्रेजों को पता चल गया जिससे योजना विफल हो गई। उनका नाम शहीदों की याद में सदा अग्रणी रहेगा। संवाद

264. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special tree plantation programme on 119th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter** and **Revolutionary Leader Malati Choudhari** on 28.07.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 29.07.2023

स्वतंत्रता सेनानी मालती चौधरी की 119वीं जयंती पर पौधरोपण

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी मालती चौधरी की 119वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजन स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में हुआ और इसकी शुरुआत महाविद्यालय प्रांगण में पौधरोपण से की गई।

कार्यक्रम डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार व दीपक के मार्गदर्शन में हुआ। डॉ. अमरदीप ने कहा कि नमक आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने में मालती चौधरी ने उत्कृष्ट योगदान दिया था। मूल रूप से पूर्वी बंगाल से संबंध रखने वालीं मालती देवी का जन्म 26 जुलाई 1904 में पटना में हुआ था। उनकी मां का नाम स्नेहलता था जो एक लेखिका थी जबकि पिता मुकुदनाथ सेन बैरिस्टर थे। बचपन में ही पिता की मृत्यु होने के कारण मालती देवी का पालन पोषण उनकी मां ने किया और 16 वर्ष की आयु में उन्हें गुरु रविंद्रनाथ टैगोर से ज्ञान प्राप्ति के लिए शांति निकेतन विश्वविद्यालय भेजा दिया। उनका जीवन टैगोर के सिद्धांत, शिक्षा, विकास और देशभक्ति से बहुत ज्यादा प्रभावित था।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी मालती चौधरी की जयंती पर पौधरोपण करते शिक्षक। विज्ञप्ति

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 29.07.2023

संक्षिप्त समाचार

आंदोलन में मालती चौधरी ने दिया उत्कृष्ट योगदान

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में पौधारोपण करते प्रोफेसर। • विज्ञप्ति

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी मालती चौधरी की 119वीं जयंती पर पौधारोपण अभियान चलाया गया। डा. अमरदीप, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, दीपक ने पौधे लगाए। डा. अमरदीप ने कहा कि नमक आंदोलन में महिलाओं की भागेदारी बढ़ाने में मालती चौधरी ने उत्कृष्ट योगदान दिया था। मूल रूप से पूर्वी बंगाल से संबंध रखने वाली मालती देवी का जन्म 26 जुलाई 1904 में पटना में हुआ था। इनके परिवार वाले विक्रमपुर ढाका कामराखंड में रहते थे। लेकिन बाद में ये लोग सिमुलतला में बस गए। इनकी मां का नाम स्नेहलता था और पिता मुकुंद नाथ सेन थे। 16 वर्ष की आयु में उन्हें गुरु रविंद्रनाथ टैगोर से ज्ञान प्राप्ति के लिए शांति निकेतन विश्वविद्यालय में भेजा। इनका जीवन टैगोर के सिद्धांत, शिक्षा, विकास और देशभक्ति से प्रभावित था। वे पति नवकृष्ण चौधरी के साथ उड़ीसा में आजादी के आंदोलन में कूद पड़ी। इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, दीपक कुमार ने भी विचार रखे।

265. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special online programme on 83rd Martyrdom Day of **Great Freedom Fighter and Revolutionary leader Sardar Udham Singh** on 31.07.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 01.08.2023

ऊधम सिंह ने युवाओं को जोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन को दी मजबूती

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी सरदार ऊधम सिंह के 83वें शहीदी दिवस पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महाविद्यालय प्राचार्या डा. रणवीर सिंह आर्य का मार्गदर्शन रहा।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि क्रांतिकारी ऊधम सिंह ने जलियांवाला बाग नरसंहार का प्रतिशोध लेकर देशभक्ति की सर्वोच्च मिसाल पेश की। 26 दिसंबर 1899 को जन्मे ऊधम सिंह भी हर भारतीय की तरह आजादी का सपना देखते थे। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जलियांवाला बाग नरसंहार ने एक बड़ा परिवर्तन किया और युवाओं को क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ मोड़ दिया।

डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने कहा कि ऊधम सिंह ने जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर इस नरसंहार के जिम्मेदार जनरल डायर को सबक सिखाने की

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय की ओर से आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में अपनी बात रखते डॉ. अमरदीप। स्रोत : संस्थान

प्रतिज्ञा ली थी। 1924 में ऊधम सिंह गदर पार्टी में शामिल हो गए और औपनिवेशिक शासन को उखाड़ने के लिए भारतीयों को संगठित करने लगे। वे विदेशों से युवा क्रांतिकारी और गोला-बारूद लाए, लेकिन उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 1931 में जेल से छूटने पर इंग्लैंड गए और गवर्नर माइकल ओ डायर को मारने के लिए योजना बनाने लगे। वहीं पर 13 मार्च 1940 को रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हॉल की मीटिंग में माइकल ओ' ड्वायर को भाषण देते समय गोली मार दी। इसके बाद उन्होंने आत्मपर्मण कर ब्रिटिश शासन का अत्याचार सहा।

दैनिक जागरण चरखी दादरी 01.08.2023

सरकारी कालेज में मनाया उधम सिंह बलिदान दिवस

दादरी 01/08/2023

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में क्रांतिकारी सरदार उधम सिंह के 83वें बलिदान दिवस पर एक आनलाइन कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि क्रांतिकारी उधम सिंह ने जलियांवाला भाग नरसंहार का प्रतिशोध लेकर देशभक्ति की सर्वोच्च मिशाल पेश की।

26 दिसंबर 1899 को जन्मे उधम सिंह बचपन से ही हर भारतीय की तरह आजादी का स्वप्न देखता था। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जलियांवाला बाग नरसंहार ने एक बड़ा परिवर्तन किया। इस घटना ने हजारों लाखों की संख्या में युवाओं को क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ मोड़ा। उधम सिंह भी उनमें से एक था जिसने जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर इस नरसंहार के जिम्मेदार जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गवर्नर माइकल ओज ड्वायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ली थी। 13 मार्च 1940 को उधम सिंह ने जनरल ड्वायर को मारकर भागने के बजाय आत्म समर्पण किया। 31 जुलाई 1940 को उधम सिंह ने हंसते हंसते फांसी के फंदे को चूमा और भारत की आजादी के संघर्ष में बलिदान दिया। इस कार्यक्रम में डा. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, पवन इत्यादि भी उपस्थित रहे।

266. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 137th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter, Social Reformer and India's first House Surgeon Muthulakshmi Reddy** on 01.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 02.08.2023

मुथुलक्ष्मी थी ब्रिटिश भारत की पहली महिला सर्जन

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देश पर स्वतंत्रता सेनानी मुथुलक्ष्मी रेड्डी की 137वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि मुथुलक्ष्मी रेड्डी भारत की पहली हाउस सर्जन रही हैं। इसके अलावा देश की पहली महिला विधायक मुथुलक्ष्मी रेड्डी थीं।

मद्रास विधान परिषद की पहली महिला उपाध्यक्ष का गौरव भी मुथुलक्ष्मी रेड्डी ने हासिल किया। तमिलनाडु के पुडुकोट्टई में 30 जुलाई 1886 को मुथुलक्ष्मी रेड्डी का जन्म हुआ था। मुथुलक्ष्मी की पढ़ाई घर पर ही हुई। लड़की होने के कारण महाराजा कालेज में उनका दाखिला नहीं हो सका। हालांकि पिता और कुछ शिक्षकों ने उन्हें घर पर ही पढ़ाया। बाद में वह मैट्रिक की परीक्षा में टापर रहीं। वह एनी बेसेंट के मार्गदर्शन में महिला अधिकारों के लिए आंदोलन में कूद पड़ीं। साल 1926 में उन्हें मद्रास विधान परिषद के लिए नामिनेट किया गया। मुथुलक्ष्मी ने महिलाओं के उत्थान की दिशा में कार्य करते हुए बाल विवाह रोकथाम कानून, देवदासी प्रथा का अंत, वेश्यालय को बंद कराने और महिलाओं व बच्चों की तस्करी रोकने के लिए कानून बनाने में अहम भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रो. पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि ने भी अपने विचार रखे।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी मुथुलक्ष्मी रेड्डी के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

अमर उजाला, चरखी दादरी 02.08.2023

मुथुलक्ष्मी रेड्डी ब्रिटिश भारत की थीं पहली सर्जन

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में समाज सुधारक रेड्डी की 137वीं जयंती पर आयोजित हुआ कार्यक्रम

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक मुथुलक्ष्मी रेड्डी की 137वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मुथुलक्ष्मी रेड्डी भारत की पहली हाउस सर्जन रही हैं। इसके अलावा देश की पहली महिला विधायक मुथुलक्ष्मी रेड्डी थीं। मद्रास विधान परिषद की पहली महिला उपाध्यक्ष का गौरव भी मुथुलक्ष्मी रेड्डी के नाम है। तमिलनाडु के पुडुकोट्टई में 30 जुलाई 1886 को मुथुलक्ष्मी रेड्डी का जन्म हुआ था। मुथुलक्ष्मी की पढ़ाई घर पर ही हुई। लड़की होने के कारण महाराजा कॉलेज में उनका दाखिला नहीं हो सका। हालांकि पिता और कुछ शिक्षकों ने उन्हें घर पर ही पढ़ाया, बाद में वह मैट्रिक की परीक्षा में टॉपर रहीं।

डॉ. अमरदीप ने कहा कि पढ़ाई में उनकी रुचि और उपलब्धि को देखते हुए पुडुकोट्टई के मार्तंड भैरव थोंडामन राजा ने मुथुलक्ष्मी को वजीफा दिलाकर हाई स्कूल में दाखिला दिलाया। उस दौर में वह अपने स्कूल की अकेली लड़की थीं। समाज के रुढ़िवादियों ने स्कूल में एक लड़की के पढ़ने को लेकर काफी हंगामा किया था लेकिन मुथुलक्ष्मी ने निडरता से सबका सामना करते हुए आगे की पढ़ाई जारी रखी। वह मद्रास मेडिकल कॉलेज के सर्जरी विभाग की पहली भारतीय लड़की बनीं। कॉलेज में सर्जरी की टॉपर और गोल्ड मेडलिस्ट बनने की उपलब्धि भी उन्होंने हासिल की। संवाद

267. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 293rd Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader Rani Velu Nachiyar** on 02.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी, 03.08.2023

नमन

महान स्वतंत्रता सेनानी वेलु नचियार की 293वीं जयंती पर बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में हुआ कार्यक्रम

'रानी वेलु नचियार ने अंग्रेजों को नाको चने चबाने को किया था मजबूर'

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी रानी वेलु नचियार की 293वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य का मार्गदर्शन रहा।

कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने बताया कि रानी वेलु नचियार तमिलनाडु के शिवगंगई क्षेत्र की धरती पर जन्मीं और अंग्रेजों से युद्ध में जीतने वाली पहली रानी थी। उन्होंने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से काफी पहले अंग्रेजों से लोहा लिया और उनको नाको चने चबवा दिए। उन्होंने बताया कि सन 1730 में वेलु नचियार का जन्म रामनाड साम्राज्य के राजा चेल्लमुथु विजयरागुनाथ सेथुपति के राजमहल में हुआ था। उन्हें युद्ध कलाओं, घुड़सवारी, तीरंदाजी और विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का प्रशिक्षण दिया गया।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में छात्राओं को संबोधित करते डॉ. अमरदीप। खास संवाद

1746 में वेलु नचियार का विवाह शिवगंगा राजा मुथु वडुगनाथ पेरियवुदय थेवर के साथ हुआ। 1772 में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना और अरकोट के नवाब की सेनाओं ने मिलकर शिवगंगई पर आक्रमण किया और इस युद्ध में वेलु नचियार के पति और कई अन्य सैनिक मारे गए। वेलु नचियार ने अपना राज्य वापिस लेने के लिए कई शासकों के साथ मैत्री बढ़ाई। हैदरअली ने रानी को 400 पौंड और 5000 सैनिक देकर मदद की थी। रानी ने अरकोट के नवाब के साथ संधि करके अपना क्षेत्र वापिस पा लिया।

इसके बाद रानी वेलु ने इतिहास में दर्ज पहला सुसाइड बम हमला करने की योजना बनाई। रानी की सेना की कमांडर कुइली ने इस योजना के लिए खुद पर घी डालकर आग लगा ली और अंग्रेजों के गोला-बारूद और हथियारों के जखीरे में कूद पड़ीं। इसी प्रकार वह अंग्रेजो को कमजोर कर वीरगति को प्राप्त हो गईं। अंग्रेजों को शिवगंगा छोड़ कर भागना पड़ा। 1796 में रानी नचियार का निधन हो गया। कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह और पवन कुमार भी मौजूद रहे।

268. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 114th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader Kishori Lal** on 03.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 04.08.2023

किशोरी लाल ने देश की आजादी के लिए जेल में बिताए 24 साल

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में वीरवार को स्वतंत्रता सेनानी किशोरी लाल की 114वीं जयंती पर डा. अमरदीप ने कहा कि पंडित किशोरी लाल ने अद्वितीय साहस का परिचय देकर स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1909 में पंजाब के होशियारपुर जिले की दसुया तहसील के धर्मपुर गांव में जन्मे किशोरी लाल ने छोटी आयु में ही बलिदानी भगत सिंह के साथ कदम मिलाते हुए देश की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। लाहौर साजिश केस में उन्हें भगत सिंह के साथ ही फांसी की सजा सुनाई गई थी।

अमर उजाला, चरखी दादरी 04.08.2023

किशोरी लाल ने 24 साल बिताए जेल में : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी किशोरी लाल की 114वीं जयंती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को उनके जीवन संघर्षों से अवगत कराया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि पंडित किशोरी लाल ने अद्वितीय साहस का परिचय देकर स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1909 में पंजाब के होशियारपुर जिले के दसुया तहसील के धरमपुर गांव में जन्मे किशोरी लाल ने छोटी आयु में ही शहीद-ए-आजम भगत सिंह के साथ आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। लाहौर साजिश केस में उन्हें भगत सिंह के साथ ही फांसी की सजा सुनाई गई लेकिन पंडित किशोरी लाल की उम्र कम होने के कारण उनको सजा उम्र कैद में बदल दी गई जिसका उन्हें उम्रभर अफसोस रहा। संवाद

269. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 178th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter Pherozeshah Mehta** on 01.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 05.08.2023

ब्रिटिश भारत में मुंबई शासन के जनक थे स्वतंत्रता सेनानी फिरोजशाह : डा. अमरदीप

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में शुक्रवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी फिरोजशाह मेहता की 178वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि चार अगस्त 1845 को मुंबई में जन्मे फिरोजशाह मेहता पारसी समाज में एमए पास करने वाले पहले युवक थे। उन्होंने चार वर्ष तक इंग्लैंड में कानून का अध्ययन किया। वहां उनका दादाभाई नौरोजी से भी संपर्क हुआ। वे वहां भारत के पक्ष में आवाज उठाने वाली संस्थाओं से भी जुड़े रहे। 1868 में वहीं से बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर भारत लौटे। 1911 में उन्होंने उस सेंट्रल बैंक आफ इंडिया की स्थापना में योगदान किया। अपने जीवन के अंतिम दिनों में फिरोजशाह मेहता ने अंग्रेजी दैनिक पत्र बाम्बे क्रानिकल का प्रकाशन आरंभ किया। बाद में इस पत्र का देश के स्वतंत्रता संग्राम में बड़ा योगदान रहा। पांच नवंबर 1915 ई. को फिरोजशाह मेहता का निधन हो गया। कार्यक्रम में डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार इत्यादि भी उपस्थित रहे।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी फिरोजशाह मेहता के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

अमर उजाला, चरखी दादरी 05.08.2023

स्वतंत्रता सेनानी फिरोजशाह मेहता को किया नमन

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी फिरोजशाह मेहता की 178 वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि फिरोजशाह ने चार वर्ष तक इंग्लैड में कानून का अध्ययन किया। 1868 में बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने 1872 के नगरपालिका अधिनियम की रूपरेखा तैयार की। इस कारण वे बंबई शासन के जनक कहलाए। 1910 में इंग्लैंड की संक्षिप्त यात्रा के पश्चात् वे बंबई विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए। देश के स्वतंत्रता संग्राम में उनका बड़ा योगदान रहा। कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह व पवन कुमार उपस्थित रहे। संवाद

270. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 97th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter Parvati Giri** on 05.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 06.08.2023

11 साल की आयु में भारत छोड़ों आन्दोलन में कूद पड़ी थी पार्वती गिरी : डा. अमरदीप

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में स्वतंत्रता सेनानी पार्वती गिरी की 97 वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानी पार्वती गिरी का जन्म पश्चिमी ओडिशा में 1926 को हुआ था। इनके पिता धनंजय गिरी, इनके चाचा कांग्रेस नेता रामचंद्र गिरी एक जाने-माने स्वतंत्रता सेनानी थे।

पार्वती गिरी जब 11 साल की थी और कक्षा तीन में पढ़ रही थी, तभी उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया और महात्मा गांधी के अगुवाई वाले भारत छोड़ो आंदोलन का हिस्सा बन गई। जिसके बाद वो सभी आंदोलनों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने लगी। उन्होंने महज 16 साल की उम्र में ही ब्रिटिश हुकूमत से टक्कर ली, उन्हें ब्रिटिश सरकार विरोधी गतिविधियों और बरगढ़ की अदालत में सरकार विरोधी नारे लगाने की वजह से दो साल तक कारावास में रखा गया, लेकिन नाबालिग होने की वजह से उन्हें छोड़ दिया गया। जिसके बाद गिरी ने वर्ष 1942 के बाद से बड़े पैमाने पर पूरे देश भर में अंग्रेजों के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन के लिए अभियान चलाया। गिरी ने सामाजिक रूप से राष्ट्र की सेवा करने का काम जारी रखा, उन्होंने अपना बाकी जीवन अपने गांव के अनाथ बच्चों को अच्छा जीवन देने के लिए समर्पित कर दिया।

बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी पार्वती गिरी के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति।

271. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 108th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter Hare Krishna Konar** on 07.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 08.08.2023

कार्यक्रम

स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन

कृष्ण कोनार को 18 साल में मिली थी काला पानी की सजा

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ कॉलेज में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशानुसार स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी हरे कृष्ण कोनार की 108वीं जयंती पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने की।

उन्होंने बताया कि मात्र 18 साल की आयु में क्रांतिकारी हरे कृष्ण कोनार को काले पानी की सजा मिली थी। उनका जन्म 5 अगस्त 1915 को ब्रिटिश भारत में बंगाल के बर्धमान जिले के कामरगोरिया गांव में हुआ था। वे एक भारतीय मार्क्सवादी क्रांतिकारी, करिश्माई किसान नेता और राजनीतिज्ञ थे। वो भारत में पहले भूमि सुधार और कृषि सुधार शुरू करने वाले नेता और साथ ही पश्चिम बंगाल भूमि पुनर्वितरण के मुख्य वास्तुकार थे।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि 1930 में ही हरे कृष्ण ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े। 1930 में धरना देने के कारण बर्धवान जेल में 6 महीने के लिए गिरफ्तार किया गया। इसके बाद जुगांतर समूह के लिए हथियार और बम बनाने के आरोप में उन्हें 18 साल की उम्र में 6 साल के लिए सेलुलर जेल की सजा सुनाई। 23 जुलाई 1974 को कैंसर के कारण कोलकाता में उनका निधन हो गया।

बिरोहड़ कॉलेज में छात्राओं को संबोधित करते डॉ. अमरदीप। फोटो: संवा

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 08-08-2023

धर्म . समाज . संस्था

जयंती • राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी हरे कृष्ण की 108वीं जयंती मनाई

हरे कृष्ण कोनार को 18 साल की आयु में काले पानी की सजा हुई : डॉ. अमरदीप

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी हरे कृष्ण कोनार की 108वीं जयंती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मात्र 18 साल की आयु में क्रांतिकारी हरे कृष्ण कोनार ने काले पानी की सजा पाई थी। उनका जन्म 5 अगस्त 1915 को ब्रिटिश भारत में बंगाल के वर्धमान जिले के कामरगोरिया गांव में हुआ था। वे एक भारतीय मार्क्सवादी क्रांतिकारी, करिश्माई किसान नेता और राजनीतिज्ञ थे। कोनार भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के संस्थापक सदस्य थे, और भारत में

विचार व्यक्त करते डॉक्टर अमरजीत सिंह।

पहले भूमि सुधार और कृषि सुधार शुरू करने वाले नेता और साथ ही पश्चिम बंगाल भूमि पुनर्वितरण के मुख्य वास्तुकार थे। 1930 में ही हरे कृष्ण ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में कूद पड़े और साथ ही क्रांतिकारी गतिविधियों में संलिप्त हो गए। 15 साल की उम्र में 9वीं कक्षा में पढ़ते समय हरे कृष्ण कोनार को बर्दवान राज कॉलेज के सामने धरना देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। जेल से रिहा होने के तुरंत बाद, कोनार फिर से सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के लिए घर से भाग गए और उन्हें अप्रैल 1930 में बर्दवान जेल में 6 महीने के लिए फिर से गिरफ्तार कर लिया गया, जेल में उनकी मुलाकात बेनॉय चौधरी से हुई और उनका रुझान क्रांतिकारी गतिविधियों की और होने लगा। 1930 के दशक में जुगांतर समूह के लिए हथियार और बम बनाने के आरोप में, उन्हें 18 साल की उम्र में 6 साल के लिए सेलुलर जेल भेज दिया गया और वहां उन्होंने पहली भूख हड़ताल में भाग लिया और 1935 में उन्होंने दूसरी भूख हड़ताल करते हुए कम्युनिस्ट कंसोलिडेटेशन की स्थापना की।

23 जुलाई 1974 को कैंसर से कोलकत्ता में निधन हो गया

जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने सबसे पहले कलकत्ता और हावड़ा में मजदूरों के बीच काम किया। कुछ महीनों के बाद कॉमरेड बिनॉय चौधरी उन्हें वर्धमान जिले में ले गए और उन्होंने किसान आंदोलन में काम करना शुरू कर दिया। इसके बाद उन्होंने किसानों के हितों की रक्षा के लिया अपनी आवाज बुलंद करनी शुरू कर दी। 1944 में उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और सरकार द्वारा वर्धमान शहर से बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 23 जुलाई 1974 को कैंसर के कारण कोलकाता में उनका निधन हो गया। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार उपस्थित रहे।

272. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 81st Anniversary of **Great Movement: Quit India Movement** on 08.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 09.08.2023

भारत छोड़ो आंदोलन की 81वीं वर्षगांठ मनाई

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में भारत छोड़ो आंदोलन की 81वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता महाविद्यालय की प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फौगाट ने की। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने बताया कि आठ अगस्त 1942 को आंदोलन शुरू हुआ और नौ अगस्त की रात से अंग्रेजी सरकार ने ऑपरेशन जीरो ऑवर के तहत दिन निकलने से पहले ही कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सभी सदस्य महात्मा गांधी समेत गिरफ्तार हो चुके थे और कांग्रेस को गैरकानूनी संस्था घोषित कर दिया गया था। यही नहीं, अंग्रेजों ने गांधी को अहमदनगर किले में नजरबंद कर दिया। इस जन आंदोलन में 940 लोग मारे गए थे और 1630 घायल हुए थे जबकि 60,229 लोगों ने गिरफ्तारी दी थी। कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह और पवन कुमार आदि उपस्थित रहे। संवाद

273. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 98th Anniversary of **Great Event of Freedom Struggle: Kakori Train Incidence** on 09.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 10.08.2023

व्याख्यान

बिरोहड़ कॉलेज में काकोरी ट्रेन डकैती की 98 वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

हिंदुस्तानी क्रांतिकारियों की वीरता से कांपती थी अंग्रेजी हुकूमत

संवाद न्यूज एजेंसी

सल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता आंदोलन की घटना काकोरी ट्रेन डकैती की 98वीं वर्षगांठ पर मनाई गई।

प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के हथियार खरीदने के लिए ब्रिटिश सरकार का ही खजाना लूट लेने की यह एक ऐतिहासिक घटना थी। काकोरी कांड की घटना नौ अगस्त 1925 को हुए ब्रिटिश राज के खिलाफ युद्ध में हथियार खरीदने के लिए एक ट्रेन से ब्रिटिश सरकार के खजाने को लूटने की थी। सचिंद्रनाथ सान्याल और राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के केवल दस सदस्यों ने इस घटना को अंजाम दिया था। राम प्रसाद बिस्मिल के घर आठ अगस्त को हुई बैठक में इस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई गई। अगले ही दिन इसे अंजाम दिया। प्रोफेसर पवन कुमार ने कहा कि ट्रेन रुकते ही क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल ने पंडित चंद्रशेखर आजाद और 6 अन्य साथियों की मदद से ट्रेन में छापा मारकर सरकारी खजाने को लूट लिया। इटपट चांदी के सिक्कों और नोटों से भरे चमड़े के थैलों को चादरों में बांध दिया और खतरे से बचने के लिए एक चादर वहीं छोड़ दी। अगले दिन अखबारों के जरिए यह खबर पूरी दुनिया में फैल गई। इस ट्रेन डकैती को ब्रिटिश सरकार ने काफी गंभीरता से लिया और उसकी जांच शुरू कर दी। डॉ. अनीता रानी ने कहा कि काकोरी कांड के बाद हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के कुल 40 क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सशस्त्र युद्ध छेड़ने, सरकारी खजाने को लूटने और गाड़ियों की हत्या का मामला शुरू किया। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेन्द्र, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ कालेज में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

व्याख्यान में बताए शहीदों की वीरता के किस्से

अमर उजाला, चरखी दादरी 10.08.2023

9 अगस्त 1925 को क्रांतिकारियों ने लूटा था अंग्रेजी हुकूमत का खजाना : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में काकोरी ट्रेन डकैती की 98वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी ने की।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश राज के खिलाफ युद्ध छेड़ने और हथियार खरीदने के लिए 9 अगस्त 1925 को ब्रिटिश सरकार का ही खजाना लूट लिया था। यह घटना इतिहास में काकोरी ट्रेन डकैती के नाम से दर्ज है। इस मामले में 16 क्रांतिकारियों को न्यूनतम 4 वर्ष कारावास से लेकर अधिकतम काला पानी अर्थात आजीवन कारावास तक की सजा दी गई थी। काकोरी ट्रेन डकैती की घटना ने आजादी के आंदोलन को अप्रत्याशित रूप से प्रभावित किया। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र व पवन कुमार आदि मौजूद रहे।

बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को काकोरी कांड की जानकारी देते डॉ. अमरदीप। स्रोत: संस्थान

274. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 115th Martyrdom Day of **Great Freedom Fighter Khudiram Bose** on 12.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 13.08.2023

फांसी की सजा सुनकर भी नहीं थी चेहरे पर कोई शिकन

खुदीराम बोस पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में क्रांतिकारी खुदीराम बोस के 115वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्राचार्य डॉ रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि खुदीराम बोस ने राष्ट्रीयता की भावना को सर्वोपरी मानते हुए आजादी के आंदोलन में अपनी आहुति देकर युवाओं को आंदोलित किया। खुदीराम बोस का जन्म 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। 15 वर्ष की आयु में 1904 में अनुशीलन समिति के क्रांतिकारी सदस्य बने। 1905 में बंगाल विभाजन ने पूरे देश में क्रांतिकारी आंदोलन को नई गति दी। उन्होंने वंदे मातरम पैम्पलेट्स बांटने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और उनके साथी ने किंग्सफोर्ड की बग्घी समझकर उसपर बम फेंका लेकिन दुर्भाग्य से उसमें भारतीय समर्थक दूसरे अंग्रेज अधिकारी की पत्नी एवं बेटी सवार थी और उनकी मौत हो गई।

दोनों क्रांतिकारी यह सोचकर भाग निकले कि किंग्सफोर्ड मारा गया है। खुदीराम बोस को वैनी रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया जबकि प्रफुल्ल चाकी ने चंद्रशेखर आजाद जैसी शहादत दी। 13 जून 1908 को इस मामले में खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई गई तो उनके चेहरे शिकन नहीं थी।

अमर उजाला, चरखी दादरी 13.08.2023

क्रांतिकारी खुदीराम की शहादत के बारे में बताया

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी खुदीराम बोस के 115वें शहीदी दिवस पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने बताया कि खुदीराम बोस ने राष्ट्रीयता की भावना को सर्वोपरी मानते हुए आजादी के आंदोलन में अपनी आहुति देकर युवाओं को प्रेरित किया था। उन्होंने बताया कि खुदीराम बोस का जन्म 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। 15 वर्ष की आयु में वे 1904 में अनुशीलन समिति के क्रांतिकारी सदस्य बने। 13 जून 1908 को अंग्रेज अधिकारी की हत्या के मामले में खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई गई। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र आदि मौजूद रहे। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 13.08.2023

खुदीराम बोस ने प्राणों की आहुति देकर युवाओं को जगाया : अमरदीप

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत शनिवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी खुदीराम बोस के 115वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि खुदीराम बोस ने राष्ट्रीयता की भावना को सर्वोपरी मानते हुए आजादी के आंदोलन में अपनी आहुति देकर युवाओं को जगाया। खुदीराम बोस का जन्म 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। 15 वर्ष की आयु में 1904 में अनुशीलन समिति के क्रांतिकारी सदस्य बने। 1905 में बंगाल विभाजन ने पूरे देश में क्रांतिकारी आंदोलन को नई गति दी। वंदे मातरम प्रचार सामग्री बांटने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शीघ्र ही खुदीराम बोस ने बम बनाना सीख लिया था। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और उनके साथी ने किंग्सफोर्ड की बग्घी समझकर उस पर बम फेंका लेकिन दुर्भाग्य से उसमें भारतीय समर्थक दूसरे अंग्रेज अधिकारी की पत्नी एवं बेटी सवार थी और उनकी मौत हो गई। कार्यक्रम में प्रो. पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि ने भी अपने विचार रखे।

275. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 76th Death Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader Sardar Ajit Singh** on 13.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 14.08.2023

आयोजन

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में 76वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन व्याख्यान

अजीत सिंह ने रखी थी पंजाब में आंदोलन की नींव

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास । आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह की 76 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह और चाचा सरदार अजीत सिंह दोनों ही पहली पीढ़ी के क्रांतिकारी थे। जिन्होंने अंग्रेजी सरकार को कड़ी टक्कर दी थी।

डॉ. अमरदीप। संवाद

अजीत सिंह का जन्म 1881 को पंजाब के जालंधर के खटकड़ कलां गांव में हुआ था। पढ़ाई के दौरान ही वह भारत के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हो गए और अपनी कानून की पढ़ाई को बीच में ही छोड़ दिया। किशन सिंह और अजीत सिंह ने भारत माता सोसाइटी की स्थापना की और अंग्रेज विरोधी किताबें छापनी शुरू कर दीं। 1907 में अंग्रेज सरकार के किसान विरोधी कानूनों के खिलाफ मजबूत आंदोलन चलाया और जगह जगह जनसभाएं करके उन्होंने पंजाब के किसानों को एकजुट किया और इन सभाओं में लाला लाजपत राय को भी बुलाया गया।

इस एक साल के दौरान सरदार अजीत सिंह के भाषणों की गूंज अंग्रेजी हुकूमत के कानों में चुभने लगी थी और उन्होंने 21 अप्रैल 1907 को अजीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें छह महीने के लिए बर्मा की मांडले जेल में निर्वासित कर दिया गया। मांडले जेल से रिहा होने पर घर आये उस समय तक भगत सिंह का जन्म हो चुका था।

आ0 14-15 अगस्त 1947 की रात को जवाहरलाल नेहरु का रेडियो पर भाषण सुनकर उन्होंने कहा था कि अब हमारा कार्य पूर्ण हो गया है और 15 अगस्त 1947 की सुबह 4 बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, डॉ नरेंद्र सिंह और जितेन्द्र इत्यादि उपस्थित रहे।

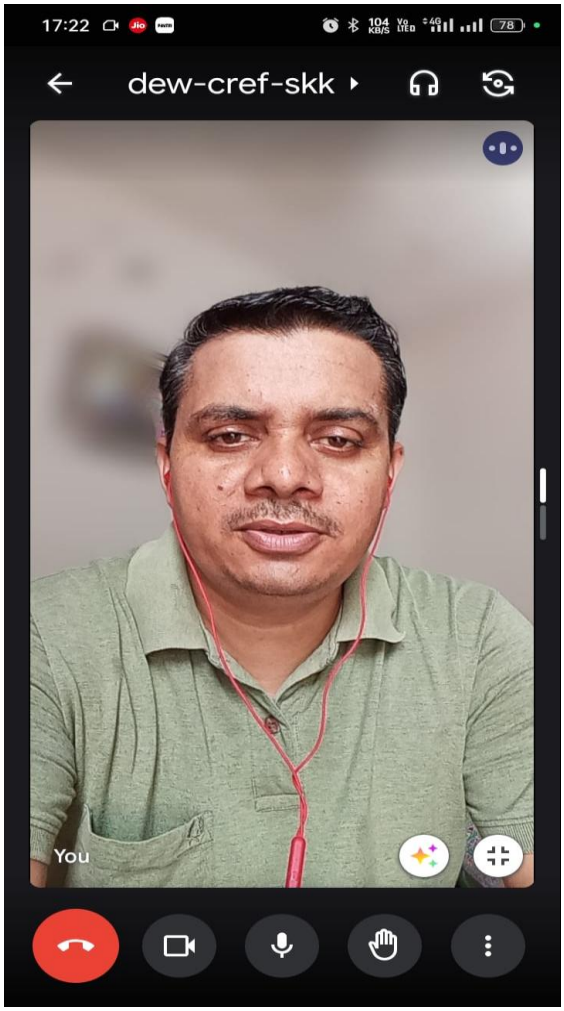

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 14.08.2023

एक नजर

क्रांतिकारी आंदोलन में अजीत सिंह की भूमिका को किया याद

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत रविवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह की 75वीं पुण्यतिथि पर एक आनलाइन कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि सरदार अजीत सिंह ने पंजाब में क्रांतिकारी आंदोलन की नींव रखी जिसमें भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा जैसे असंख्य क्रांतिकारी शामिल हुए। भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह और चाचा सरदार अजीत सिंह दोनों ही पहली पीढ़ी के क्रांतिकारी थे। अजीत सिंह का जन्म 1881 को पंजाब के जालंधर के खटकड़ कलां गांव में हुआ था। वह भारत के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हो गए। 21 अप्रैल 1907 को अंग्रेजों ने अजीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया।

276. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 77th Independence Day on 15.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता दिवस की 77 वीं वर्षगांठ पर रंगारंग कार्यक्रम का किया आयोजन

झज्जर, 16 अगस्त (अभीतक) : 15 अगस्त को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस की 77 वीं वर्षगांठ के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुवात भारत की आन-बान-शान तिरंगा के आरोहण और राष्ट्रगान से हुई। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि भारत की आज़ादी के लिए लाखों स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों ने असंख्य कुर्बानियां दी है। 1785 से तिलका मांझी द्वारा अंग्रेजी हुकूमत का विरोध करना प्रारम्भ हुआ जो मंगल पांडे, मातादीन हेला, लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई इत्यादि से होती हुई कांग्रेस के नरम दल से गरम दल से होती आगे बढ़ी। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरु, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस इत्यादि ने पूरी दिशा बदल थी वहीँ क्रांतिकारियों भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, दुर्गा भाभी इत्यादि ने उसमे नई जान डाली। वहीँ दूसरी ओर राजाराम राममोहन राय, स्वामी अछुतानंद, डा. भीमराव अम्बेडकर ने नई सामाजिक और धार्मिक बदलाव की नींव डाली और आधुनिक समाज की ओर भारत को अग्रसर किया। नारी शक्ति की प्रतिक सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू, एनी बीसेंट, सुहासिनी गांगुली, भीकाजी कामा, रमाबाई, कस्तूरबा गाँधी इत्यादि ने भारत में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए अपनी पूरी जिन्दगी न्योछावर कर दी थी। इसके साथ साथ अन्य अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों ने आजाद भारत को जो स्वप्न देखा और उसके लिए मर मिटे, वह दिन 15 अगस्त 1947 को आया। उस दिन हर व्यक्ति के हाथ में तिरंगा था, वैसा ही आज हर व्यक्ति के हाथ में तिरंगा है। कार्यक्रम की अध्यक्षा डा. अनीता फोगाट ने कहा कि आज़ादी की लड़ाई लम्बी थी, परन्तु हमारे सेनानियों ने कभी हार नही मानी। आज हमारा और विशेषकर युवाओं का कर्तव्य है कि वे आज़ादी पर किसी प्रकार की आँच ने आने दे, हर तरह से इसकी रक्षा करे। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डा. अमरदीप ने चतुर्थ कर्मचारियों को आज़ादी की 77 वीं वर्षगांठ पर उन्हें उपहार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

277. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 114th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader Basawan Singh** on 21.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 22.08.2023

एक नजर

भूला नहीं जा सकता क्रांतिकारी बसावनी सिंह का बलिदान : डा. अमरदीप

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत शुक्रवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्रशासनिक अधिकारी डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी बसावन सिंह के 114वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि बसावन सिंह लोकतांत्रिक समाजवाद के लिए प्रतिबद्ध नेता थे। 1909 में जमालपुर, हाजीपुर बिहार में एक गरीब किसान परिवार में बसावन सिंह का जन्म हुआ था। 10 साल की उम्र में वे महात्मा गांधी को देखने और सुनने के लिए हाजीपुर भाग गए। बसावन सिंह मेधावी छात्र थे और उन्होंने प्राथमिक और मध्य विद्यालयों दोनों में छात्रवृत्तियां प्राप्त की थी। बसावन सिंह ने 1926 में मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। बसावन सिंह स्कूल के दौरान सिंह क्रांतिकारियों के संपर्क में आए और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के प्रमुख योगेंद्र शुक्ला उनके गुरु थे। 1930 में बसावन सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें 7 साल जेल की सजा सुनाई गई लेकिन बच निकलने में वे कामयाब रहे। इस अवसर पर प्रो. जितेंद्र इत्यादि भी उपस्थित रहे।

278. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 114th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader Chakradhar Bhuyan** on 23.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

राजेश संदीप, रविंद्र

अमर उजाला, चरखी दादरी 24.08.2023

क्रांतिकारी नेता चक्रधर भुइयां को किया याद

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी नेता चक्रधर भुइयां के 96वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी ने की। मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि असम में राष्ट्रीय आंदोलन और महात्मा गांधी के प्रभाव को फैलाने में चक्रधर भुइयां ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1929 में असम के पानीगांव में जन्मे चक्रधर भुइयां ने महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। वे कांग्रेस के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे और स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं के साथ काम किया। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र भी उपस्थित रहे। संवाद

279. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special Triveni Plantation programme on 115th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader Shivaram Rajguru** on 24.08.2023 in Collaboration with Youth Red Cross.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 25.08.2023

बिरोहड़ गांव के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी शिवराम राजगुरु को किया याद, लगाई त्रिवेणी

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के मार्गदर्शन में वीरवार को क्रांतिकारी शिवराम राजगुरु की 115वीं जयंती के अवसर पर पौधारोपण किया गया। डा. अमरदीप, डा. नरेंद्र सिंह, प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र, दीपक इत्यादि ने त्रिवेणी लगाई। इतिहास विभागाध्यक्ष एवं यूथ रेडक्रास प्रभारी डा. अमरदीप ने कहा कि शिवराम राजगुरु ने अपने क्रांतिकारी कारनामों से ब्रिटिश हुकुमत को हिला दिया था। 24 अगस्त 1908 में महाराष्ट्र के पुणे के खेड़ गांव मे जन्मे राजगुरु ने प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव से और बाद में बनारस में संस्कृत की पढ़ाई की थी। बनारस प्रवास के दौरान इनकी मुलाकात क्रांतिकारियों से हुई और 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बने। राजगुरु के जीवन का क्रांतिकारी मोड़ लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद आया।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में पौधारोपण करते शिक्षक। • विज्ञप्ति

क्रांतिकारियों ने लालाजी की मौत को देश का अपमान माना और बदला लेने के लिए चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव एवं अन्य क्रांतिकारियों ने लाठीचार्ज कराने वाले पुलिस अधीक्षक जेम्स ए स्काट को मारने की योजना बनाई। लेकिन स्काट की बजाय पुलिस अधिकारी, सहायक आयुक्त, जान पी सांडर्स जो लाठीचार्ज में शामिल थे उनकी हत्या कर दी गई। डा. अनिता फौगाट ने कहा कि कुछ समय तक उत्तर प्रदेश में रहने के बाद राजगुरु नागपुर चले गए और यहीं 30 सितंबर 1929 को इन्हें पकड़ लिया। सांडर्स की हत्या के दोषी मानते हुए भगत सिंह, सुखदेव थापर व शिवराम राजगुरु को 23 मार्च 1931 को फांसी दी गई थी।

प्रशासन को चाहिए की इनको गोशाला भिजवाए। दुकानदार कूड़ा डाल देते हैं, जि सवार गिरकर चोटिल

के आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में

सफल आयोजन के लिए जिला मौलिक ाष भारद्वाज और जिला डॉ. सुदर्शन पुनिया ने ी।

AMAR UJALA, JHAJJAR 25.08.2023

राजगुरु ने अंग्रेजों के छुड़ा दिए थे छक्के : अमरदीप

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग की ओर से कार्यक्रम का आयोजन

बिरोहड़ में महाविद्यालय में राजगुरु की जयंती पर पौधरोपण करता स्टाफ। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं यूथ रेड क्रॉस के संयुक्त तत्वावधान में वीरवार को प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में महान क्रांतिकारी शिवराम राजगुरु की 115वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, प्रो. पवन कुमार, जितेन्द्र, दीपक इत्यादि ने महाविद्यालय प्रांगण में त्रिवेणी का रोपण किया।

इतिहास विभागाध्यक्ष एवं यूथ रेड क्रॉस प्रभारी डॉ. अमरदीप ने कहा कि शिवराम राजगुरु ने अपने क्रांतिकारी कारनामों से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। 24 अगस्त 1908 में महाराष्ट्र के पुणे के खेड़ गांव मे जन्मे राजगुरु ने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव से और बाद में बनारस में संस्कृत की पढ़ाई की थी। बनारस प्रवास के दौरान इनकी मुलाकात क्रांतिकारियों से हुई और 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बने। इस एसोसिएशन के सदस्य के रूप में राजगुरु ने पंजाब, आगरा, लाहौर और कानपुर जैसे शहरों में जाकर वहां के युवाओं को एसोसिएशन के साथ जोड़ने का कार्य किया। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि कुछ समय तक उत्तर प्रदेश में रहने के बाद राजगुरु नागपुर चले गए थे और यही पर 30 सितम्बर, 1929 में जब ये नागपुर से पुणे जा रहे थे, तब इन्हें अंग्रेजों द्वारा पकड़ लिया गया था।

अमर उजाला, चरखी दादरी
25.08.2023

महान क्रांतिकारी राजगुरु की जयंती पर किया पौधरोपण

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं यूथ रेडक्रॉस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी शिवराम राजगुरु की 115 वीं जयंती के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र व दीपक ने महाविद्यालय प्रांगण में त्रिवेणी का रोपण किया। इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि शिवराम राजगुरु ने अपने क्रांतिकारी कारनामों से ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया था। राजगुरु के जीवन का क्रांतिकारी मोड़ लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद आया जो साइमन कमीशन का विरोध करने पर लाठीचार्ज का शिकार हुए थे। कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. अनीता फौगाट ने कहा कि सांडर्स की हत्या में दोषी ठहराते हुए भगत सिंह, सुखदेव थापर और शिवराम राजगुरु को 23 मार्च 1931 में फांसी दी गई थी। संवाद

280. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 150th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter G.A. Natesan (**Ganapathi Agraharam Annadhurai Ayyar Natesan) on 28.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

पुरस्कार मिला ... य रही।
इस अवसर प

अमर उजाला, झज्जर 29.08.2023

आजादी के आंदोलन में नटेसन का सहयोग

साल्हावास। क्षेत्र के गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत स्वतंत्रता सेनानी गणपति अग्रहारम नटेसन के 150 वें जन्मदिन पर उन्हें नमन किया। अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में इसका आयोजन किया गया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि गणपति अग्रहारम नटेसन एक भारतीय लेखक, पत्रकार, प्रकाशक, राजनीतिज्ञ और तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी के स्वतंत्रता-सेनानी थे। उन्होंने राष्ट्रवादी किताबें प्रकाशित कीं। जिनमें से सबसे प्रमुख द इंडियन रिव्यू थी। नटेसन का जन्म 25 अगस्त 1873 को तंजावुर जिले के गणपति अग्रहारम गांव में हुआ था। नटेसन अपने शुरुआती दिनों से ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुए थे। 1900 में, उन्होंने अंग्रेजी में एक मासिक प्रकाशन द इंडियन रिव्यू शुरू किया। अधिकांश राष्ट्रवादी विषयों को कवर करते हुए, द इंडियन रिव्यू में साहित्यिक समीक्षा में सहयोग किया। संवाद

281. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 203rd Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader of 1857 Revolt: Begum Hazrat Mahal** on 29.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 30.08.2023

स्वतंत्रता सेनानी बेगम हजरत महल को किया याद

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी बेगम हजरत महल के 203वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने कहा कि भारत को अंग्रेजों से आजादी दिलाने में पुरुषों के साथ साथ महिलाओं ने भी अपना योगदान दिया। इन्हीं वीरांगनाओं में से एक थीं बेगम हजरत महल। इनके नाम से अंग्रेजी हुकूमत भी कांपती थी। 1857 की क्रांति में इनकी बहादुरी और शक्ति संगठन ने अंग्रेजों को नाकों चने चबाने पर मजबूर कर दिया था। इस अवसर पर प्रोफेसर नरेंद्र सिंह, जितेंद्र और पवन कुमार उपस्थित रहे। संवाद

282. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 179th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter Dinshaw Edulji Wacha** on 31.08.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर, 01.09.2023

179वीं जयंती पर सर दिनशा इडलजी वाचा को किया याद

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग व हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी के सर दिनशा इडलजी वाचा 179वीं जयंती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1844 में जन्मे सर दिनशा वाचा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में प्रमुख योगदान देने वाले मुंबई के तीन मुख्य पारसी नेताओं में से एक थे। अपने अन्य दोनों साथी पारसी नेताओं, सर फिरोज शाह मेहता तथा दादा भाई नौरोजी के सहयोग से सर दिनशा वाचा ने भारत की गरीबी और गरीब जनता से सरकारी करों के रूप में वसूल किए गए धन के अपव्यय के विरुद्ध स्वदेश में और शासक देश ब्रिटेन में लोकमत जगाने के लिए अथक परिश्रम किया। वाचा ने अपने कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में भारत में अकाल पड़ने के कारणों का बड़ा मार्मिक विवेचन किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख सदस्य वे उसकी स्थापना के समय से ही रहे ओर 13 वर्ष तक उसके महामंत्री भी रहे। यद्यपि 1920 में वह कांग्रेस छोड़कर लिबरल (उदार) दल के संस्थापकों में सम्मिलित हुए लेकिन 25 वर्ष से अधिक काल तक वह कांग्रेस के दहकते अग्निपुंज के रूप में विख्यात रहे। इस विशेष कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र इत्यादि ने उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 01.09.2023

सर दिनशॉ का 179वां जन्मदिवस मना दी जानकारी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशों पर महान स्वतंत्रता सेनानी सर दिनशॉ एडुल्जी वाचा के 179वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप रहे।

उन्होंने कहा कि 1844 में जन्मे सर दिनशॉ एडुल्जी वाचा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में प्रमुख योगदान देने वाले बंबई के तीन मुख्य पारसी नेताओं में से एक थे। वो आर्थिक और वित्तीय मामलों के विशेषज्ञ थे। वे भारत में ब्रिटिश शासन के विशेषतः ब्रिटेन द्वारा भारत के आर्थिक शोषण के अत्यंत कटु आलोचक थे। वे इस विषय के विभिन्न पहलुओं पर लेख लिखकर और भाषण देकर लोगों का ध्यान आकर्षित करते थे।

सर दिनशॉ एडुल्जी बंबई के तीन मुख्य पारसी नेताओं में से एक थे

डॉ. अमरदीप ने कहा कि उन्होंने इंग्लैंड जाकर भी उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों में भारतीय शोषण की बहुत प्रभावी तरीके से जानकारी दी। उन्होंने भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा किए जा रहे प्रशासनिक और सैन्य खर्चों में भारी कटौती की जोरदार वकालत की। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र आदि उपस्थित रहे। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 01.09.2023

ब्रिटेन में शोषण के कटु आलोचक थे सर दिनशा वाचा : डा. अमरदीप

बिरोहड़ के कालेज में सर दिनशा इडलजी वाचा के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में स्वतंत्रता सेनानी के सर दिनशा इडलजी वाचा 179वें जन्मदिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि 1844 में जन्में सर दिनशा वाचा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में प्रमुख योगदान देने वाले बंबई के तीन मुख्य पारसी नेताओं में से एक थे। उनहोंने कहा कि सर दिनशा आर्थिक और वित्तीय मामलों के विशेषज्ञ थे और इन विषयों में उनकी सूझ बड़ी ही पैनी थी। वे भारत में ब्रिटिश शासन के विशेषत: ब्रिटेन द्वारा भारत के आर्थिक शोषण के अत्यंत कटु आलोचक थे। इंग्लैंड जाकर भी उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों में भारतीय शोषण की बहुत प्रभावी तरीके से जानकारी दी। इसके पश्चात भारत में सुधार के लिए अंग्रेजी सरकार द्वारा कानून बनाने पड़े। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि उपस्थित रहे।

283. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 179th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Shachindranath Bakshi** on 02.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 03.09.2023

जन्मतिथि पर स्वतंत्रता सेनानी शचीन्द्रनाथ को किया नमन

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में जन्मदिवस पर संगोष्ठी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ बख्शी के 119वें जन्मदिवस के संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में उन्हें नमन किया गया। संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि शचीन्द्रनाथ बख्शी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। उनका जन्म 1904 में बनारस में हुआ था। 1923 में दिल्ली की स्पेशल कांग्रेस के दौरान वे बिस्मिल के संपर्क में आए। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति के लिए गठित हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य होने के अलावा इन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी कांड में भाग लिया था वे पुलिस के हाथ नहीं आये। घर से फरार हो गये और बिहार में गुप्त रूप से क्रांतिकारी कार्य करते रहे। उनको भागलपुर में पुलिस उस समय गिरफ्तार कर पायी जब काकोरी-काण्ड के मुख्य मुकदमे का फैसला हो चुका था। स्पेशल जज जेआरडब्लू बैनेट की अदालत में काकोरी षषयंत्र का मुकदमा दर्ज हुआ और 13 जुलाई 1927 को उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गयी। इसी मुकदमें में अशफाक उल्ला खां को फांसी की सजा हुई थी।

उन्होंने उत्तर प्रदेश विधान सभा का चुनाव जीता और लखनऊ जाकर रहने लगे। अपने जीवन काल में उन्होंने दो पुस्तकें भी लिखीं। सुल्तानपुर में 80 वर्ष का आयु में 1984 में उनका निधन हुआ। इस अवसर पर प्रोफेसर पवन कुमार जितेन्द्र इत्यादि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप । संवाद

284. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 198th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter: Dadabhai Naoroji** on 04.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

न्यूज डायरी

अमर उजाला, झज्जर
05.09.2023

राष्ट्रवाद के जनक थे दादा भाई: डॉ. अमरदीप

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी दादा भाई नौरोजी के 198 वें जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि दादा भाई नौराजी भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद के जनक थे। प्रशासनिक अधिकारी डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. अमरदीप ने कहा कि नौरोजी 1892 में हुए ब्रिटेन के आम चुनावों में ''लिबरल पार्टी'' के टिकट पर ''फिन्सबरी सेंट्रल'' से जीतकर भारतीय मूल के पहले ''ब्रितानी सांसद'' बने थे। उनका जन्म 4 सितम्बर 1825 को बम्बई में जन्मे थे। वह दिग्गज राजनेता, उद्योगपति, शिक्षाविद और विचारक भी थे। 1845 में एल्फिन्स्टन कॉलेज में गणित के प्राध्यापक हुए। भारत में राष्ट्रवाद का उदय और विकास के लिए अनेक संगठनों का निर्माण दादाभाई नौराजी ने भारत और लन्दन में किया। संवाद

285. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 134th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Sharat Chandra Bose** 06.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

के मुख
भी दी

अमर उजाला, झज्जर 07.09.2023

भारत विभाजन के विरोधी थे शरत चंद्र बोस : अमरदीप

शरत चंद्र बोस जयंती पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी शरत चंद्र बोस के जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि शरत चंद्र बोस का जन्म 6 सितंबर 1889 में कटक में हुआ। शरत चंद्र बोस सुभाष चंद्र बोस के बड़े भाई थे और दोनों भाई एक-दूसरे के प्रति समर्पित थे। शरत चंद्र ने चितरंजन दास के निर्देशन में राजननीतिक जीवन की शुरुआत की। अहिंसा में विश्वास रखने के बावजूद शरत चंद्र का क्रांतिकारियों के प्रति सहानुभूति का दृष्टिकोण था। संवाद

286. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special Tree Plantation programme on 120th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter Kamaladevi Chattopadhya**y on 08.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 09.09.2023

नमक आंदोलन में हुई थी कमला देवी की गिरफ्तारी

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी कमलादेवी चट्टोपाध्याय की 120 वीं जयंती के अवसर पर एक पौधरोपण किया गया।

इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, पवन कुमार, जितेद्र इत्यादि द्वारा वृक्षारोपण किया गया। 1903 में मैंगलूरु में जन्मी कमला देवी गांधीजी के नमक आंदोलन में गिरफ्तारी देने वाली पहली महिलाओं में से एक थी। कमला देवी चट्टोपाध्याय महिला अधिकारों के लिए प्रतिबद्ध थी। इसके साथ साथ एक ऐसी राजनेता थी। जिन्हें कुर्सी की दरकार नही थी। एक ऐसी महिला थी जिन्होंने लोक कलाओं को पुनर्जीवित किया। विभाजन के बाद उन्होंने शरणार्थियों के पुनर्वास में अपने आप को झोंक दिया। कमला देवी महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरोजिनी नायडू तथा कस्तूरबा गांधी से गहरे रूप से प्रभावित थी। उन्होंने स्वाधीनता संघर्ष में हिस्सा लिया तथा अनेकों बार जेल गयी। कमला देवी ने 'ऑल इंडिया वीमेन्स कांफ्रेंस' की स्थापना की। इसके साथ साथ वह पहली ऐसी भारतीय महिला थीं, जिन्होंने 1920 के दशक में खुले राजनीतिक चुनाव में खड़े होने का साहस जुटाया था। वह भी ऐसे समय में जब बहुसंख्यक भारतीय महिलाओं को आजादी शब्द का अर्थ भी नहीं मालूम था। ये महात्मा गांधी के

कॉलेज में पौधरोपण करता स्टाफ। संवाद

'असहयोग आंदोलन' और 'नमक आंदोलन' में हिस्सा लेने वाली महिलाओं में से एक थीं। नमक कानून तोड़ने के मामले में बांबे प्रेसीडेंसी में गिरफ्तार होने वाली वे पहली महिला थीं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वे चार बार जेल गईं और पांच साल तक सलाखों के पीछे रहीं। आजादी के बाद इन्हें वर्ष 1952 में 'आल इंडिया हेंडीक्राफ्ट' का प्रमुख नियुक्त किया गया। तत्पश्चात कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने देश के विभिन्न हिस्सों में बिखरी समृद्ध हस्तशिल्प तथा हथकरघा कलाओं की खोज की दिशा में अद्भुत एवं सराहनीय कार्य किया। एक समाज सुधारक के रूप में, उन्होंने भारतीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में मदद करने के लिए हस्तशिल्प, रंगमंच और हथकरघा को वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर पवन कुमार, जितेन्द्र इत्यादि उपस्थित रहे।

287. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special Tree Plantation programme on 108th Martyrdom Day of **Great Freedom Fighter and Revollutionary Leader: Jatindranath Mukherjee** on 09.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 10.09.2023

पौधारोपण कर क्रांतिकारी जतिंद्रनाथ को किया याद

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में क्रांतिकारी जतिंद्र नाथ मुखर्जी की 108वीं बलिदान दिवस पर पौधारोपण किया गया। डा. अमरदीप, जितेंद्र और मंजीत ने कहा कि जतिंद्र नाथ मुखर्जी बाघा जतिन के नाम से विख्यात थे। उन्होंने एक छोटे से चाकू से खूंखार बाघ को ढेर कर दिया था।

सात दिसंबर 1879 को तत्कालीन बंगाल प्रेजीडेंसी में जन्मे जतिंद्र नाथ युवावस्था से ही आजाद भारत का स्वप्न लिए क्रांतिपथ पर चल पड़े थे। स्वामी विवेकानंद और अरविंद घोष ने उनके जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया और उन्होंने अपना जीवन को देश के लिए बलिदान करने का प्रण कर लिया था। तत्कालीन समय में क्रांतिकारियों के पास आंदोलन के लिए धन जुटाने का प्रमुख साधन डकैती था। जतिंद्र नाथ ने उस समय की दो बड़ी डकैतियां डाली। जिन्हें इतिहास में गार्डन रीच की डकैती और बलिया घाट के नाम से जाना जाता है। महाविद्यालय की

कालेज में जतिंद्रनाथ मुखर्जी के बलिदान दिवस पर पौधारोपण करते शिक्षक। • विज्ञप्ति।

प्रशासनिक अधिकारी डा. अनिता रानी ने कहा कि 9 सितंबर 1915 को अंग्रेजी अधिकारियों और सिपाहियों ने जतिंद्र नाथ को घेर लिया और भयंकर मुठभेड़ में घायल होने के बाद 10 सितंबर 1915 को इस बहादुर सिपाही ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र ने भी अपने विचार रखे।

288. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 128th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Social Reformer: Vinobha Bhave** on 11.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 12.09.2023

अंग्रेजों के धुर विरोधी थे विनोभा भावे: अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी विनोभा भावे के 128वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्राचार्य रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में इसका आयोजन किया गया। संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि भारतीय आजादी के आंदोलन में आचार्य विनोभा भावे में अद्वितीय स्थान है। 951 में वह आंध्र प्रदेश, वर्तमान तेलंगाना, के हिंसाग्रत क्षेत्र की यात्रा पर थे। 18 अप्रैल, 1951 को पोचमपल्ली गांव के अछूतों ने उनसे भेंट की। उन लोगों ने विनोबा भावे से करीब 80 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने का आग्रह किया, ताकि वे लोग अपना जीवन-यापन कर सके। इस घटना से भारत के त्याग और

विनोभा भावे जयंती पर कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ.अमरदीप। संवाद

अहिंसा के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया। यहीं से आचार्य विनोबा भावे का भूदान आंदोलन शुरू हो गया। यह आंदोलन 13 सालों तक चलता रहा।

इस आंदोलन के माध्यम से वह गरीबों के लिए 44 लाख एकड़ भूमि दान के रूप में हासिल करने में सफल रहे। उन जमीनों में से 13 लाख एकड़ जमीन को भूमिहीन किसानों के बीच बांट दिया गया। इस विशेष कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

289. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 128th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Shiv Verma** on 12.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

प्रकार से तीसरे स्थान पर
को चुना गया। प्रतियोगिता
बढ़ चढ़कर भागीदारी की
के साथ कालेज में च

आयोजित प्रतियोगिताओं में से
ने जाएंगे। परिषद के महासचिव
खुराना ने बताया कि विजेता
ों को परिषद की ओर से

अमर उजाला, झज्जर 13.09.2023

कार्यक्रम

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में क्रांतिकारी की जयंती पर किया संगोष्ठी का आयोजन

शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत थे शिव वर्मा : अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी शिव वर्मा की 108वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1904 में जिला हरदोई के ग्राम खोतली में जन्मे शिव वर्मा को क्रांतिकारी साथियों के बीच उन्हें शिवदा, शिव, प्रभात नाम से जाना जाता था। 1921 के दौरान विद्यार्थी जीवन में ही वे असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गए थे। हरदोई जिले में मदारी पासी के नेतृत्व में चलाए जा रहे किसान आंदोलन, जिसे एका आंदोलन के नाम से भी जाना गया, में सक्रिय तौर पर भाग लिया।

बिरोहड महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ अमरदीप । स्रोत : संस्थान

1926 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की सदस्यता ग्रहण की और वायसराय के भारत आगमन पर उसे मारने में जयदेव कपूर, बटुकेश्वर दत्त और राजगुरु का साथ दिया। दिल्ली से स्थान बदलकर वह अन्य क्रांतिकारियों डॉ. गयाप्रसाद व जयदेव के साथ सहारनपुर में बम बनाने का कार्य करने लगे। 13 मई, 1929 को सभी साथी बमों के साथ रंगे हाथों गिरफ्तार हुए और लाहौर के बोस्टल जेल में रखे गए। यहीं बाद में उन्हें लाहौर षड्यंत्र केस के अभियुक्त बनाए गए। इसी बहुचर्चित मामले में सरदार भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को फांसी की सजा सुनाई गई थी और शिवदा व उनके साथियों को आजीवन काला पानी की सजा के चलते अंडमान भेज दिया गया था। उन्होंने बताया कि शिव वर्मा ने जेल में भूख हड़तालें कीं और पाशविक अत्याचार सहे। इस दौरान एक आंख में गलत दवा डाल दिए जाने से भी ताउम्र पीड़ित रहे। 14 वर्ष का आजीवन कारावास पूरा करने के बाद भी उन्हें हरदोई जेल में रखा गया और 21 फरवरी1946 को रिहा किया गया। रिहा होने के बाद भी वे कम्युनिस्ट पार्टी में विधिवत कार्य करते रहे। शस्त्र और शास्त्र दोनों पर समान अधिकार रखने वाले शिवदा पत्रकारिता व लेखन कार्य से जीवनभर जुड़े रहे। उन्होंने प्रयागराज से प्रकाशित होने वाली 'चांद' पत्रिका के 'फांसी अंक' में विभिन्न नामों से क्रांतिकारियों पर अनेक लेख लिखे। 'शहीद भगत सिंह की संकलित रचनाएं''मौत का इंतजार' में कैदियों के संस्करणात्मक रेखाचित्र प्रकाशित जितेन्द्र, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

290. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 94th Martyrdom Day of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Jatindra Nath Das** on 13.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 14.09.2023

अध्यक्ष कालूराम ... सचिव
राम अवतार बा...

'जतिंद्रनाथ ने आजादी के लिए दी थी जान'

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता संग्राम के अमर क्रांतिकारी जतिंद्रनाथ दास के 94वें शहीदी दिवस पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने कहा कि जतिंद्रनाथ दास ऐसे क्रांतिकारी थे जिसने देश की आजादी के लिए जेल में जान दी थी और ब्रिटिश हुकूमत का अमानवीय चेहरा सबके सामने ला दिया था। कोलकाता के एक साधारण बंगाली परिवार में 27 अक्तूबर 1904 को जन्मे जतिंद्रनाथ दास महज 16 साल की उम्र में ही देश की आजादी के आंदोलन में कूद गए थे। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सेमिनार में डॉ. पवन कुमार व जितेंद्र उपस्थित रहे। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 14.09.2023

जाता है और ... क प्रेगनेंसी
का सुचारू स...

आजादी की जंग में जतिन्द्रनाथ का अहम योग्दान

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग और हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर क्रांतिकारी जतिंद्र नाथ दास की 94 वीं शहीदी दिवस पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि जतिंद्र दास वह क्रांतिकारी जिसने देश की आजादी के लिए जेल में अपनी जान दी थी और ब्रिटिश हुकूमत का अमानवीय चेहरा सबके सामने ला दिया था। कोलकाता के एक साधारण बंगाली परिवार में 27 अक्टूबर 1904 को जन्मे जतिंद्रनाथ दास महज 16 साल की उम्र में ही देश की आजादी के आंदोलन में कूद गए थे। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। संवाद

291. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 224th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Bakht Khan** on 14.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 15.09.2023

बिरोड़ महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप सिंह। स्रोत : संस्था

बख्त खान सेनानियों के कमांडर इन चीफ थे : अमरदीप

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी सूबेदार बख्त खान के 224वें जन्मदिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि सूबेदार बख्त खान ने अंग्रेजी हुकूमत को करारी हार दी थी। बख्त खां के नेतृत्व में बरेली छावनी में 31 मई, 1857 को 18वीं और 68वीं देशज रेजिमेंट ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सफल विद्रोह किया और बरेली से अंग्रेजी हुकूमत को समाप्त कर दिया। एक जुलाई को बख्त खां अपनी फौज और चार हजार मुस्लिम सैनिकों के साथ दिल्ली पंहुचे। इस दौरान बहादुर शाह जफर को क्रांतिकारियों द्वारा देश का सम्राट घोषित किया गया। दिल्ली में बनी नई सरकार चलाने का जिम्मा बख्त खान के नेतृत्व में एक समिति को दिया गया और उन्हें भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के कमांडर-इन-चीफ की जिम्मेदारी दी गई। इस अवसर पर प्रोफेसर सवीन, जितेंद्र, डॉ. रीना, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया और अजय सिंह आदि उपस्थित रहे। संवाद

292. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 108th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter: Sona Ram Chutia** on 16.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

01262-268568 प्रवीण कुमार,
89013-84498 कुमार एडवोकेट
सकता है। ब्यूरो

अमर उजाला, झज्जर 17.09.2023

सोनाराम ने भारत छोड़ो आंदोलन को दी थी दिशा

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी की जयंती पर कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी सोनाराम असमिया के 108वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इसकी अध्यक्षता प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फोगाट ने की। कार्यक्रम संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि सोनाराम असमिया एक महान स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद् थे। 1915 में ब्रिटिश राज के दौरान असम के जोरहाट जिले के बामकुकुरचोवा गांव में जन्मे सोनाराम असमिया की शिक्षा जोरहाट में हुई और उन्होंने कॉटन कॉलेज से बीएससी पूरा किया। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. अनीता रानी के कहा कि 1942 में सोनाराम ने इस आंदोलन को असम में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उसी वर्ष, अंग्रेजों ने सोनाराम को स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण हिरासत में ले लिया और जोरहाट सेंट्रल जेल में भेज दिया। 1946 में सोनाराम असमिया श्रीमंत शंकरदेव संघ में शामिल हो गए और अपना शेष जीवन समूह की मदद करने के लिए समर्पित कर दिया। इस अवसर पर पवन कुमार, जितेन्द्र उपस्थित रहे।

बिरोहड़ महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

अतिथि संगठन के युवा विंग अध्यक्ष अधिवक्ता अनिल साह ने शिरकत की। अनिल ने

अमर उजाला, चरखी दादरी 17.09.2023

स्वतंत्रता सेनानी सोनाराम चुटिया को किया याद

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में शनिवार को महान स्वतंत्रता सेनानी सोनाराम चुटिया के 108वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फौगाट की देखरेख में उनके जीवन संघर्ष के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि सोनाराम चुटिया एक महान स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद् थे। उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई लड़ने के साथ-साथ आजादी के बाद अपना जीवन लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया। इस अवसर पर पवन कुमार, जितेंद्र आदि उपस्थित रहे। संवाद

293. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 128th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Great Administrator: V.P. Menon** on 20.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर, 21.09.2023

एकीकरण की मुहिम के बड़े योद्धा थे वीपी मेमन : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज़ एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्रशासनिक अधिकारी डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी वाप्पला पंगुन्नि मेनन के 140 वें जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि दो साल के भीतर 500 से ज्यादा देसी रियासतों को मिलाकर 14 नए राज्य बना दिए गए जोकि वी पी मेमन की एक बड़ी कामयाबी थी। रजवाड़ों के प्रति पटेल की खुली अवमानना पर दरअसल वीपी के व्यक्तित्व में बसी चतुराई, अक्खड़पन और बेरहमी का असर देखा जा सकता है, जिसने भारत के नक्शे का वो आकार दिया अन्यथा भारत का नक्शा आज कुछ और ही होता और अनेक छोटे बड़े देश भारत में होते। 1893 में मद्रास प्रेसिडेंसी के मालाबार जिले के ओट्टापलम में जन्में वाप्पला पंगुन्नि मेनन ने टाइपिस्ट के रूप में प्रशासनिक करियर की शुरुआत किया था और फिर अपनी मेहनत के बल पर अंग्रेजी प्रशासन के शीर्ष पर पहुंचे थे। अपने 37 साल के करियर में एक क्लर्क की हैसियत से उठकर मेनन नौकरशाही में अपनी कड़ी मेहनत के दम पर ही तीन वायसरायों के सलाहकार के पद तक पहुंचे थे।

मेनन 15 अगस्त को भारत के आजाद होने के साथ ख़त्म होने वाले सत्ता हस्तांतरण समारोह के बाद रिटायरमेंट लेने की सोच रहे थे लेकिन रिटायरमेंट की जगह उन्हें सरदार वल्लभभाई पटेल की ओर से बुलावा आ गया। सरदार पटेल को हाल ही में बने गृह मंत्रालय का कार्यभार दिया गया था ताकि रियासतों के विलय का मुश्किल काम किया जा सके और इस विभाग के सचिव मेनन को बनाया गया। अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन और फिर पटेल के साथ काम करने वाले मेनन ने विलय पत्र पर काम किया।

294. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 128th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter: U.N. Dhebar** on 21.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 22.09.2023

स्वतंत्रता सेनानी ढेबर का 118वां जन्मदिवस मनाया

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी यूएन ढेबर का 118वां जन्मदिवस मनाया गया। इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि उछारंगराय नवलशंकर ढेबर का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अहम योगदान रहा। डॉ. अमरदीप ने कहा कि पेशे से वकील ढेबर ने 1936 में राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने के लिए अपना कॅरिअर छोड़ दिया था। उन्होंने राजकोट सत्याग्रह और काठियावाड़ एजेंसी के शासकों के खिलाफ जिम्मेदार प्रशासन और लोकप्रिय सरकार के लिए संघर्ष का आयोजन किया। वह व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन का भी हिस्सा थे। इस अवसर पर प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 22.09.2023

राजकीय कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी यूएन ढेबर के 118वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि उछारंगराय नवलशंकर ढेबर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक उल्लेखनीय व्यक्ति थे। उनका जन्म 21 सितंबर 1905 को नवानगर रियासत में हुआ था, जो आज के गुजरात के जामनगर जिले में स्थित थी। वह ट्रेड यूनियन आंदोलनों और नागरिक अधिकारों के लिए राजनीतिक आंदोलनों से जुड़े थे। ढेबर ने 1954 तक राज्य के पहले मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। यूएन ढेबर आजादी के बाद भी विभिन्न पदों पर देश की सेवा करते रहे। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह उपस्थित रहे। संवाद

295. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 154th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter V. S. Sriniwas Shastri** on 25.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, चरखी दादरी 26.09.2023

विद्यार्थियों को श्रीनिवास शास्त्री के जीवन परिचय से करवाया अवगत

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी वीएस श्रीनिवास शास्त्री का 154वां जन्मदिन मनाया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को शास्त्री के जीवन परिचय से अवगत करवाया।

उन्होंने कहा कि राजनीतिक क्षेत्र में श्रीनिवास शास्त्री ने गोपालकृष्ण गोखले को अपना गुरु माना था। इनकी शुरू से ही जीवन की सामाजिक समस्याओं में अभिरुचि थी। उन्होंने 1930 और 1931 के दौरान भारत में संवैधानिक सुधारों के प्रस्तावों पर चर्चा के लिए लंदन में आयोजित गोलमेज सम्मेलनों में सक्रिय भागेदारी की। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र और पवन कुमार आदि भी उपस्थित रहे।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. अमरदीप। स्रोत: संस्थान

अमर उजाला, झज्जर 26.09.2023

श्रीनिवास शास्त्री के जन्मदिवस पर सेमिनार आयोजित

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग व हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी वीएस श्रीनिवास शास्त्री के 154वें जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता फोगाट ने की। कार्यक्रम संयोजक व इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि श्रीनिवास शास्त्री का पूरा नाम ''वालांगीमन शंकरनारायण श्रीनिवास शास्त्री'' था। इनका जन्म ग्राम वालंगइमान, जिला तंजौर, कर्नाटक में 22 सितंबर 1869 में हुआ था। 1926 में उन्हें दक्षिण अफ्रीका भेजा गया और 1927 में उन्हें वहां का एजेंट-जनरल नियुक्त किया गया। भारतीय सरकार ने उन्हें मलाया में भारतीय मजदूरों की दशा पर रिपोर्ट देने के लिए भी नियुक्त किया। 1930 और 1931 के दौरान उन्होंने भारत में संवैधानिक सुधारों के प्रस्तावों पर चर्चा के लिए लंदन में आयोजित गोलमेज सम्मेलनों में सक्रिय भागीदारी की। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र और पवन कुमार उपस्थित रहे। संवाद

296. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 203rd Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Social Reformer: Ishwar Chandra Vidhyasagar** on 26.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 27.09.2023

स्त्री शिक्षा के हिमायती थे ईश्वरचंद्र : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में दार्शनिक व शिक्षाविद ईश्वर चंद्र विद्यासागर की 203 वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि ईश्वरचंद्र विद्यासागर भारत के प्रसिद्ध समाज सुधारक, शिक्षा शास्त्री व स्वाधीनता सेनानी थे। वे गरीबों के संरक्षक माने जाते थे। उन्होंने स्त्री-शिक्षा और विधवा विवाह पर जोर दिया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने मेट्रोपोलिटन विद्यालय सहित अनेक महिला विद्यालयों की स्थापना करवाई। नैतिक मूल्यों के संरक्षक और शिक्षाविद् विद्यासागर का मानना था कि अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के ज्ञान का समन्वय करके ही भारतीय और पाश्चात्य परंपराओं के श्रेष्ठ को हासिल किया जा सकता है।

बिरोहड़ महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 27.09.2023

'समाज सुधारक थे ईश्वरचंद्र विद्यासागर'

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में 203वें जन्मदिवस पर हुआ कार्यक्रम

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में छात्राओं को जानकारी देते सहायक प्रोफेसर अमरदीप सिंह। स्रोत: संस्थान

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी ईश्वरचंद्र विद्यासागर के 203वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह का मार्गदर्शन रहा।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ईश्वरचंद्र विद्यासागर भारत के प्रसिद्ध समाज सुधारक, शिक्षा शास्त्री व स्वाधीनता सेनानी थे। वे गरीबों व दलितों के संरक्षक माने जाते थे। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पास करवाने में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने स्त्री-शिक्षा और विधवा विवाह पर काफी जोर दिया। विद्यासागर ने मेट्रोपोलिटन विद्यालय सहित अनेक महिला विद्यालयों की स्थापना करवाई।

नैतिक मूल्यों के संरक्षक और शिक्षाविद विद्यासागर का मानना था कि अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के ज्ञान का समन्वय करके ही भारतीय और पाश्चात्य परंपराओं के श्रेष्ठ को हासिल किया जा सकता है। उन्होंने बहुपत्नी प्रथा और बाल विवाह के खिलाफ भी संघर्ष छेड़ा। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र व डॉ. नरेंद्र सिंह उपस्थित रहे।

297. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 116th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Bhagat Singh** on 27.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर, 28.09.2023

कार्यक्रम

राजकीय महाविद्यालय में शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती पर व्याख्यान का आयोजन

भगत सिंह के नाम से थर-थर कांपती थी अंग्रेजी हुकूमत

संवाद न्यूज एजेंसी

सासरावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में शहीद ए आजम भगत सिंह के 116 वीं की जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

116
वीं जयंती मनाया, छात्राओं को दी जानकारी

महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में इसका आयोजन किया गया। संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह आजादी के दीवाने थे, और उनकी आजादी मात्र अंग्रेजों की वापसी नही बल्कि आम आदमी के मानवीय अधिकारों की पुनः स्थापना थी। एक समय भारतीय इतिहास में ऐसा आया तब ब्रिटिश हुकूमत को हिलाकर रख देने इस महान देशभक्त भगत सिंह की प्रसिद्धि महात्मा गाँधी से भी ज्यादा हो गई थी। भगत सिंह ने अपने विचारों और क्रांतिकारी गतिविधियों से आजादी के संग्राम को नई दिशा दी और एक नई जान फूंकी।

1919 के जलियांवाला बाग नरसंहार ने भगत सिंह को बहुत प्रभावित किया और उन्हें क्रांतिकारी पथ पर चलने की लिए प्रेरित किया। 1926 में भारत नौजवान सभा की स्थापना करके भगत सिंह ने सबसे पहले पंजाब और फिर बाद में सारे भारत के नौजवानों को क्रांतिपथ पर चलने के लिए प्रभावित किया।घटना ने न केवल भारत में ब्रिटिश हुकूमत बल्कि लन्दन स्थित महारानी की सत्ता को जोर से हिला दिया था। कार्यक्रम के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य डॉ रणवीर सिंह आर्य ने कहा कि अप्रैल 1929 में केन्द्रीय असेम्बली बम विस्फोट ने भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को एक तरह से सारी भारतीय जनता का प्रतिनिधि बना दिया था क्योंकि उस दिन मजदूर और व्यापार विरोधी बिल पास होने थे।

भले ही भगत सिंह को 1931 में फांसी की सजा दे दी गई परन्तु उनके संघर्ष को हम कभी भूल नही पाएंगे। आज भी भगत सिंह युवाओं के प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ महाविद्यालय में विस्तृत व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 28.09.2023

आजादी के दीवाने थे शहीद भगत सिंह : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी भगत सिंह के 116वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह आजादी के दीवाने थे और उनकी आजादी मात्र अंग्रेजों की वापसी नहीं बल्कि आम आदमी के मानवीय अधिकारों की पुनः स्थापना थी।

डॉ. अमरदीप ने कहा कि एक समय भारतीय इतिहास में ऐसा आया जब ब्रिटिश हुकूमत को हिलाकर रख देने पर इस महान देशभक्त की प्रसिद्धि महात्मा गांधी से भी ज्यादा हो गई थी। भगत सिंह ने अपने विचारों और क्रांतिकारी गतिविधियों से आजादी के संग्राम को नई दिशा दी और एक नई जान फूंकी। 1919 के जलियांवाला बाग नरसंहार ने भगत सिंह को बहुत प्रभावित किया और उन्हें क्रांतिकारी पथ पर चलने की लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने भी विद्यार्थियों को भगत सिंह के जीवन के बारे में बताया। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार आदि उपस्थित रहे। संवाद

298. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 119th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Mahavir Singh** on 04.10.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 06.10.2023

महावीर सिंह का शव अंग्रेजों ने समुद्र में फेंका था

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी महावीर सिंह राठौर के 119 वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि आजादी की जंग में क्रांतिकारी महावीर सिंह राठौर का अतुलनीय योगदान था। वे गदर आंदोलन और हिंदुस्तान सोशल रिपब्लिकन आर्मी के वीर सिपाही थे। उत्तरप्रदेश के जनपद कासगंज स्थित गांव शाहपुर टहला में जन्मे महावीर सिंह राठौर युवावस्था से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो गए थे। बड़े होकर महावीर भगत सिंह राजगुरु व सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। 1929 में दिल्ली एसेंबली में बम फेंकने व सांडर्स की हत्या के बाद भगत बटुकेश्वर दत्त, राजगुरु व सुखदेव के साथ महावीर सिंह को

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को क्रांतिकारी महावीर सिंह के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

भी हिरासत में ले लिया गया। वहीं यूपी के कासगंज जनपद के शाहपुर टहला गांव में जन्मे महावीर सिंह राठौर युवावस्था से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो गए थे। मुकदमे की सुनवाई के लिए उन्हें लाहौर भेज दिया गया। मुकदमा समाप्त हो जाने पर सांडर्स की हत्या में भगत सिंह की सहायता करने के अभियोग में महावीर सिंह को उनके सात अन्य साथियों के साथ आजीवन कारावास का दंड दिया गया। प्रो. पवन कुमार, जितेंद्र, डा. नरेंद्र सिंह भी उपस्थित रहे।

पवनकाशिक, ...लया। उमग
हंस, देवेश श... ने श्रद्धालुओं
राजरानी नरुला... ा। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 05.10.2023

कार्यक्रम

बिरोहड़ कॉलेज में स्वतंत्रा सेनानी महावीर सिंह की जयंती पर व्याख्यान

महावीर सिंह को किया नमन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता क्रांतिकारी के 119वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि आजादी की जंग में क्रांतिकारी महावीर सिंह राठौर का अतुलनीय योगदान था।

वे गदर आंदोलन और हिंदुस्तान सोशल रिपब्लिकन आर्मी के एक वीर सिपाही जाने जाते थे। उत्तर प्रदेश के जनपद कासगंज स्थित शाहपुर टहला नामक एक छोटे से गांव में जन्में महावीर सिंह राठौर युवावस्था से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गये थे।

बिरोहड़ महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

बड़े होकर महावीर जी भगतसिंह राजगुरु व सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आ गये थे। 1929 में दिल्ली असेंबली में बम फेंकने व सांडर्स की हत्या के बाद भगत बटुकेश्वर दत्त राजगुरु सुखदेव के साथ महावीर सिंह को भी हिरासत में ले लिया गया। मुकदमे की सुनवाई के लिए उन्हें लाहौर भेज दिया गया।

मुकदमा समाप्त हो जाने पर सांडर्स की हत्या में भगत सिंह की सहायता करने के अभियोग में महावीर सिंह को उनके सात अन्य साथियों के साथ आजीवन कारावास का दंड दिया गया। भगत सिंह राजगुरु सुखदेव व अन्य क्रांतिकारियों के साथ साथ महावीर सिंह राठौर भी 40 दिनों तक जेल के अंदर ही भूख हड़ताल पर रहे।

299. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 111th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Veer Vitthal Kotwal** on 05.10.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 06.10.2023

वीर विट्ठल ने अंग्रेजी राज किया था ठप : डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप । संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

महान स्वतंत्रता क्रांतिकारी विट्ठल कोटवाल के 111वें जन्मदिवस पर किया कार्यक्रम का आयोजन

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देशन में महान स्वतंत्रता क्रांतिकारी विट्ठल कोटवाल के 111वें जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि विट्ठल कोटवाल उन गुमनाम और अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

स्थानीय स्कूल में पढ़ाई के बाद, उन्होंने मुंबई में कानून की पढ़ाई पूरी की और 1941 में वकील बन गए। जैसे ही विट्ठल कोटवाल माथेरान लौटे, वह अपने परिवार की परंपरा को आगे बढ़ाने की अपने पिता की इच्छा को अस्वीकार करते हुए सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में शामिल हो गए। उन्होंने पश्चिमी मुंबई तट पर विनाशक चक्रवात में मछुआरा समुदाय की मदद की। बाद में उन्हें पता चला कि किस प्रकार जमींदार किसानों को उनकी अज्ञानता के कारण धोखा देते हैं तो उन्होंने इन किसानों के बच्चों के लिए स्वैच्छिक स्कूल की घोषणा की।

उन्होंने क्षेत्र में कुल मिलाकर ऐसे 42 स्कूल शुरू किए। सितंबर 1942 से नवंबर 1942 तक उन्होंने 11 तोरण गिरा दिए, जिससे उद्योग और रेलवे ठप हो गए। इस खतरे का मुकाबला करने के लिए पुलिस ने भाई कोटवाल की गिरफ्तारी के लिए 2500 रुपये के नकद पुरस्कार की घोषणा की, लेकिन एक जमींदार की ओर से अंग्रेजों को भाई कोटवाल की सूचना देने के कारण 1943 में उनकी एक एनकाउंटर में मृत्यु हो गई।

हरिवि ... डॉ.
रामच

अमर उजाला, चरखी दादरी 06.10.2023

क्रांतिकारी कोटवाल के जीवन से कराया अवगत

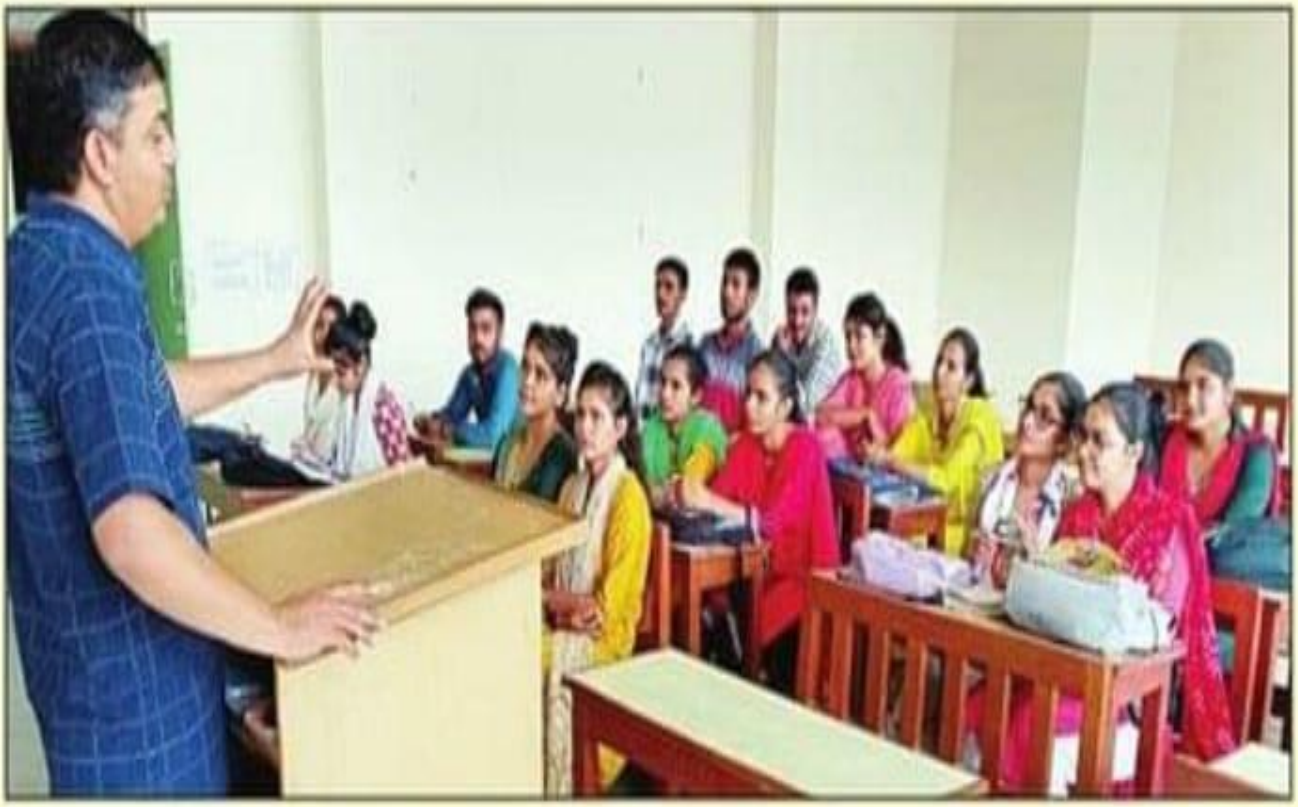

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता क्रांतिकारी विट्ठल कोटवाल के 111वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि विट्ठल कोटवाल उन गुमनाम और अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। डॉ. अमरदीप ने कहा कि उन्होंने 42 स्कूल शुरू किए। इसी तरह जब सूखे के समय जमींदारों ने किसानों को अनाज देने से इन्कार कर दिया तो विट्ठल कोटवाल किसानों के लिए अनाज बैंक का अभिनव विचार लेकर आए। संवाद

300. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 131st Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Roshan Singh** on 06.10.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 300 वां कार्यक्रम, दैनिक जागरण, चरखी दादरी 07.10.2023

कालेज में क्रांतिकारी रोशन सिंह को किया याद

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के दिशा निर्देश पर स्वतंत्रता क्रांतिकारी रोशन सिंह के 131वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि रोशन सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर के गांव नबादा में 1892 में हुआ था।

रोशन सिंह ने बचपन से ही तलवार, बंदूक, गदा इत्यादि सीखना शुरू कर दिया था। देशभक्ति की भावना बचपन से ही उनके मन में थी। 1921-22 में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में आरंभ से ही रोशन सिंह शाहजहांपुर तथा बरेली जिले के गांवों में घूम घूम कर ग्रामीणों तक स्वराज का संदेश पहुंचाते रहे। ब्रिटिश हुकूमत से सीधे सीधे मोर्चा लेने वाले हजारों लाखों हिंदुस्तानी नौजवान उस आंदोलन के चलते जेलों में ठूंसे जा चुके थे। आजादी के दीवाने रोशन सिंह ने बरेली जिले में एक अंग्रेज पुलिस कर्मी की बंदूक छीन ली। जिसने वहां मौजूद भीड़ के ऊपर ही गोलियां बरसाई थीं। इसके लिए उन्हें दो साल का कठोर कारावास की सजा मिली। रिहा होने के बाद 1924 में रोशन सिंह हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए। 19 दिसंबर 1927 को उनको फांसी दी गई। इस अवसर पर प्रो. पवन कुमार, जितेंद्र, डा. नरेंद्र सिंह ने भी अपने विचार रखे।

- आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ गांव के महाविद्यालय में क्रांतिकारी रोशन सिंह के 131वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया

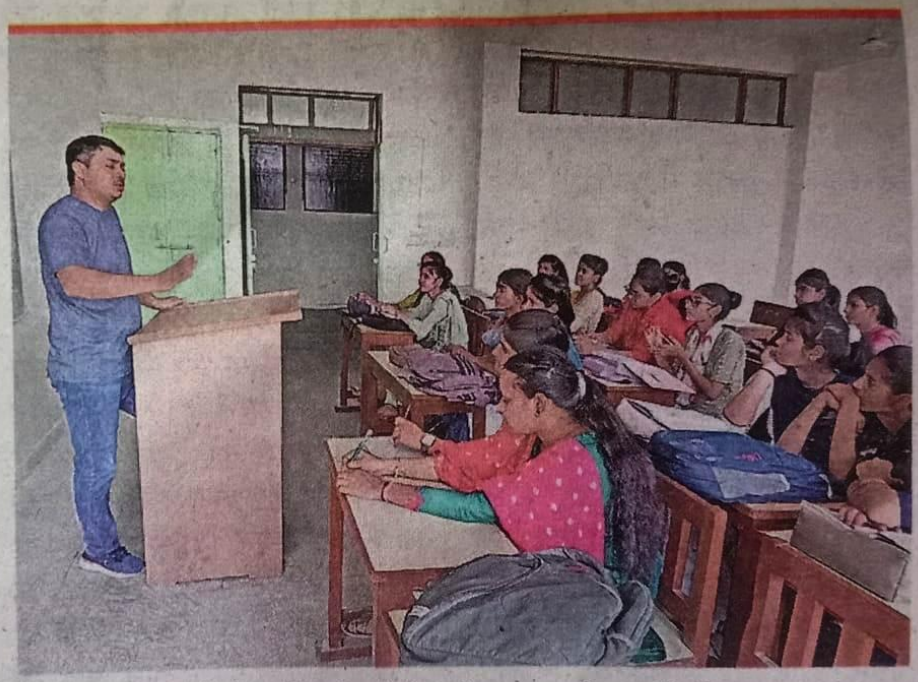

कालेज में क्रांतिकारी रोशन सिंह के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 300 वां कार्यक्रम
अमर उजाला, चरखी दादरी 07.10.2023

क्रांतिकारी रोशन सिंह को दी श्रद्धांजलि

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में स्वतंत्रता क्रांतिकारी रोशन सिंह के 131वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि रोशन सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में स्थित गांव नबादा में 1892 में हुआ था। उन्होंने बचपन से ही तलवार, बंदूक, गदा आदि सीखना शुरू कर दिया था। 1921-22 में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में आरंभ से ही रोशन सिंह शाहजहांपुर व बरेली जिले के गांवों में घूम-घूम कर ग्रामीणों तक स्वराज संदेश पहुंचाते रहे। रोशन सिंह नौ अगस्त, 1925 को काकोरी रेलवे स्टेशन के पास यात्री ट्रेन को रोक कर सरकारी खजाना लूटने के आरोप में 19 दिसंबर 1927 को फांसी दे दे गई। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे। संवाद

301. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised 300th programme of this initiative on the occasion of 116th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader: Durga Bhabhi** on 09.10.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

प्रथम, किरण **अमर उजाला, झज्जर, 10.10.2023** थम, एस

वीरांगना दुर्गा भाभी की 116वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में वीरांगना दुर्गा भाभी की 116 वीं जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1928 में लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेने के लिए लाहौर में बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता दुर्गा भाभी ने की थी।

उन्होंने बताया कि पंजाब के गवर्नर हेली को मारने की योजना में टेलर नामक एक अंग्रेज अफसर घायल हो गया था, जिस पर गोली दुर्गा भाभी ने ही चलायी थी। क्रांतिकारी भगतसिंह के साथ इन्हीं दुर्गावती देवी ने 18 दिसंबर 1928 को वेश बदलकर कलकत्ता मेल से यात्रा की थी। चंद्रशेखर आजाद के अनुरोध पर दि फिलॉसफी ऑफ बम दस्तावेज तैयार करने वाले क्रांतिकारी भगवतीचरण बोहरा की पत्नी दुर्गावती बोहरा क्रांतिकारियों के बीच दुर्गा भाभी के नाम से मशहूर थीं। संवाद

302. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 154th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter V. S. Sriniwas Shastri** on 25.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

संचालक ज ... स्कूल मैनेजर
केएम डागर ... । संवाद

अमर उजाला, झज्जर 14.10.2023

शहीदी दिवस पर व्याख्यान का आयोजन

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में क्रांतिकारी बखतावर सिंह ठाकरान के 166वें शहीदी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि जंगे-ए-आजादी में हरियाणा के झाड़सा के बखतावर सिंह ठाकरान ने फांसी पर चढ़ना स्वीकार किया, लेकिन अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके। इनके बलिदान से लोगों में ऐसी क्रांति पैदा हुई जो आजादी मिलने के बाद ही खत्म हुई। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र, पवन मौजूद रहे। संवाद

303. Dr. Amardeep worked as Convener of **Azadi Ka Amrit Mahotsav** and organised a special programme on 154th Birth Anniversary of **Great Freedom Fighter V. S. Sriniwas Shastri** on 25.09.2023 in Collaboration with Haryana History Congress.

अमर उजाला, झज्जर 31.10.2023

जहांगीर भाभा की जयंती पर व्याख्यान का किया आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान वैज्ञानिक और देशभक्त होमी जहांगीर भाभा की 114 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारत के न्यूक्लियर प्रोग्राम के जनक डॉ. होमी जहांगीर भाभा थे। होमी जहांगीर भाभा ने परमाणु विज्ञान के क्षेत्र में भारत को शक्तिशाली देश बनाने की जो कल्पना की थी, उसी की बदौलत आज देश सबसे मजबूत परमाणु शक्तियों में एक के रूप में उभरा है। यही वजह है कि उन्हें देश में परमाणु कार्यक्रम के जनक के तौर पर जाना जाता है। होमी जहांगीर भाभा का जन्म 30 अक्तूबर 1909 को मुंबई के पारसी परिवार में हुआ था। होमी भाभा प्रारंभिक शिक्षा मुंबई में पूरी करने के बाद वह 1930 में अमेरिका के कैंब्रिज विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने चले गए और बाद में 1935 में ब्रिटेन की कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से परमाणु भौतिकी में पीएचडी की। वर्ष 1940 में होमी भाभा छुट्टियों के लिए भारत आए थे, तभी द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया और वह यहीं रुक गए।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ अमरदीप सिंह। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 31.10.2023

कार्यक्रम

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में मनाई गई महान वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा की 114वीं जयंती

'जहांगीर भाभा ने देखा था परमाणु शक्ति संपन्न देश का स्वप्न'

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में महान वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा की 114वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य का मार्गदर्शन रहा। वक्ताओं ने विद्यार्थियों को होमी जहांगीर भाभा के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारत के न्यूक्लियर प्रोग्राम के जनक डॉ. होमी जहांगीर भाभा थे। उनका जन्म 30 अक्तूबर 1909 को मुंबई के पारसी परिवार में हुआ था। होमी भाभा प्रारंभिक शिक्षा मुंबई में पूरी करने के बाद 1930 में अमेरिका के कैंब्रिज विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने चले गए और बाद में विश्वविद्यालय से परमाणु भौतिकी में छुट्टियों के लिए भारत आए थे, तभी 1935 में ब्रिटेन की कैम्ब्रिज पीएचडी की। वर्ष 1940 में होमी भाभा द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया और वह यहीं रुक गए। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। आजादी के पश्चात होमी भाभ ने तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को परमाणु कार्यक्रम शुरू करने के लिए राजी किया।

अप्रैल 1948 को एटॉमिक एनर्जी एक्ट पास किया गया और होमी भाभा को न्यूक्लियर प्रोग्राम का निदेशक नियुक्त कर दिया गया। एटॉमिक एनर्जी एक्ट के तहत इंडियन एटॉमिक एनर्जी कमीशन का गठन किया गया, जिसका मकसद परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भारत को अपने पैरों पर खड़ा करना था। होमी जहांगीर भाभा परमाणु ऊर्जा आयोग के निदेशक थे और देश के न्यूक्लियर प्रोग्राम की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई। उनके नेतृत्व में एटॉमिक एनर्जी कमीशन ने 1956 में पहला परमाणु रिएक्टर, अप्सरा विकसित किया।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में होमी जहांगीर भाभा के इतिहास की जानकारी लेतीं छात्राएं। संवाददाता

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 01.11.2023

पुलिस ने

न्यूक्लियर प्रोग्राम के जनक थे होमी जहांगीर

चरखी दादरी, विज्ञप्ति : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के मार्गदर्शन में वैज्ञानिक और देशभक्त होमी जहांगीर भाभा की 114 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि भारत के न्यूक्लियर प्रोग्राम के जनक डा. होमी जहांगीर भाभा थे। होमी जहांगीर भाभा ने परमाणु विज्ञान के क्षेत्र में भारत को शक्तिशाली देश बनाने की जो कल्पना की थी उसी की बदौलत आज देश सबसे मजबूत परमाणु शक्तियों में शामिल है। होमी जहांगीर भाभा का जन्म 30 अक्टूबर 1909 को मुंबई के पारसी परिवार में हुआ था। होमी भाभा प्रारंभिक शिक्षा मुंबई में पूरी करने के बाद 1930 में अमेरिका के कैंब्रिज विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने चले गए। बाद में 1935 में ब्रिटेन की कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से परमाणु भौतिकी में पीएचडी की। वर्ष 1940 में होमी भाभा छुट्टियों के लिए भारत आए थे तभी द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया और वह यहीं रुक गए। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। आजादी के बाद होमी भाभा ने तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को परमाणु कार्यक्रम शुरू करने के लिए राजी किया। अप्रैल 1948 को एटामिक एनर्जी एक्ट पास किया गया व होमी भाभा को न्यूक्लियर प्रोग्राम का निदेशक नियुक्त कर दिया गया। प्रो. पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि ने भी होमी भाभा जहांगीर को याद किया।

विद्यार्थियों को देशभक्त होमी जहांगीर भाभा के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति